॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य समुपदिष्ट

वैष्णव परम्परानुसार

नित्यकर्म-पद्धति

अ. पं. श्रीलाडिलीशरण ब्रह्मचारी
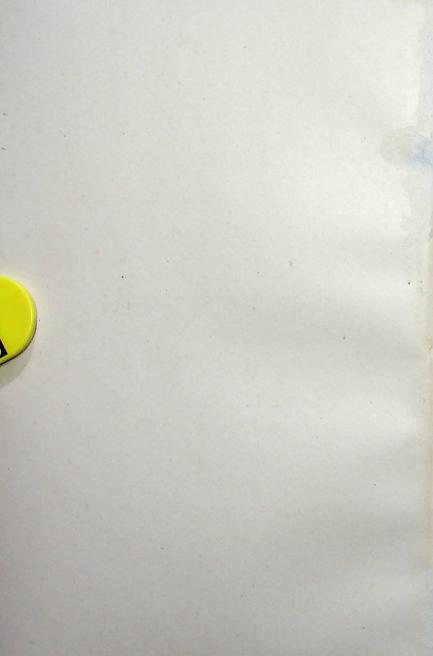
* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
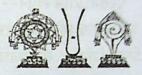
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणोक्त श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य
समुपदिष्ट वैष्णव परम्परानुसार

नित्यकर्म--पद्धति

संकलनकर्ता--

अ० पं० श्रीलाडिलीशरण ब्रह्मचारी

व्याकरण तीर्थ, न्यायालंकार, काव्यरत्न, वेदान्तशास्त्री

प्रकाशक--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ--सलेमाबाद (राजस्थान)

तृतीय संस्करण
२०००

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव
वि० सं० २०५६

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
पुष्करक्षेत्र, जिला-अजमेर (राज०)

तृतीयावृत्ति--
दो हजार

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क--मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
जिला--अजमेर (राज०) ३०५८१५

न्यौछावर
दश रूपये मात्र

भूमिका

परम दयालु विश्व हितार्थ बद्धपरिकर, भगवदीय धर्म के प्रवर्तक देवर्षि श्रीनारदजी सर्वत्र पर्यटन करते हुये श्रीसनकादि समुपदिष्ट तत्त्व को भूतल में प्रवृत्त करने की कामना से एक दिन श्रीसुदर्शनाश्रम में पधारे । वहाँ भगवदाज्ञा से अवतीर्ण श्रीसुदर्शनावतार नियमानन्द नामक श्रीनिम्बार्क ने देवर्षि प्रवर का स्वागत करके उन्हें दिव्य आसन पर पधराया । पुरुषोत्तम श्रीप्रिया-प्रियतम की प्रेरणा से ही मुझे उपदेश करने के लिए आपश्री यहाँ पधारे हैं--यह मन में विचार करके श्रीनियमानन्द ने मुमुक्षुजनों के उपकारार्थ श्रुतिशिरस्क उपनिषद् भाग, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद् गीता आदि के गुह्यतम एकान्त निर्णय की जिज्ञासा से निवेदन किया--भगवन् किं वेदान्तरहस्यम् (भगवन्! वेदान्त का रहस्य क्या है ?) देवर्षि श्रीनारदजी ने इस प्रश्न का समुचित समाधान किया ।

इसी प्रसङ्ग में श्रीनियमानन्द ने भगवद्भावापत्तिरूप मोक्ष व इसके अन्तरङ्ग उपायों के सम्बन्ध में भी अपनी जिज्ञासा प्रकट की, जिसका समाधान करते हुए देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी ने कहा--

तद्भावापत्ति (उस पर-ब्रह्म सवितृ-पदार्थ श्रीसर्वेश्वर प्रभु के भाव-असाधारण धर्म विशेष की प्राप्ति अर्थात् निरन्तर प्रभु विषयक अनुभव में जीव की स्थिति) ही मोक्ष है ।

बद्धावस्था में अनादिकर्मात्मिका माया से युक्त होने के कारण जीव का धर्म भूत ज्ञान कर्मानुसार संकुचित हो जाता है। मुक्तावस्था में अपहत पाप्मत्व (निष्पापत्व), विरजत्व, विशो-

कत्व आदि से सम्पन्न विज्ञान घनीभूत अपने स्वरूप का आविर्भाव होने पर वह जीव निरतिशय व अनवच्छिन्न, ज्ञान, आनन्द आदि के आश्रय श्रीसर्वेश्वर प्रभु विषयक अनुभव में निरन्तर अवस्थित होता है । अर्थात् कर्म बन्धन से मुक्त होकर नित्य निकुञ्जविहारी सर्वेश्वर श्रीराधामाधव की लीलाओं का वह निरन्तर अनुभव करता रहता है । इसी का नाम मोक्ष है । यह कर्म, ज्ञान, उपासना, प्रपत्ति, गुर्वाज्ञानुवृत्ति, योग आदि अनेक साधनों से प्राप्त होती है ।

उक्त साधनों में कर्मयोग तीन प्रकार का है--१-नित्य २-नैमित्तिक और ३-काम्य ।

१-अहरहः सन्ध्यामुपासीत, यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहोति इति वेद-विहित, स्नान, नित्य सन्ध्योपासना, जप, तर्पण आदि तथा यज्ञ, दान, अध्ययन आदि त्रैवर्णिक द्विज-साधारण एवं इन्द्रिय-निग्रह, तीर्थसेवा, उपवास, फलाहार, देह-शोषण, अन्न-दान आदि सर्व साधारण **नित्यकर्म** हैं, जो कर्त्तृत्वादि अभिमान से शून्य निष्काम मुमुक्षुओं द्वारा अनुष्ठित होने पर अन्तःकरण की शुद्धि व ज्ञान, भक्ति की उत्पत्ति द्वारा मोक्ष के साधक होते हैं ।

२-कालादि विशेष निमित्त से विधीयमान श्राद्धादि तथा प्रायाश्चित्तादि भी **नैमित्तिक कर्म** होते हैं ।

३-स्वर्ग कामो यजेत-इत्यादि कामना को अधिकृत करके विधीयमान कर्म **काम्य कर्म** होते हैं ।

इनमें नित्य व नैमित्तिक कर्म अपने-अपने वर्ण व आश्रम के अधिकार के अनुसार भगवदाज्ञापालनात्मक भजन रूप होने से अवश्य करने चाहिये । त्रैवर्णिक मुमुक्षुओं द्वारा वैदिक तथा

एक जाति (चतुर्थ वर्ण) द्वारा अपने अनुरूप तर्पण, अन्नदान आदि पौराणिक कर्म किये जाने चाहिये । काम्य कर्मों का तो संसार हेतु होने से निषिद्ध कर्मों के समान सर्वथा त्याग कर देना चाहिये ।

श्रुति-स्मृति ममैवाज्ञे य उल्लङ्घ्य प्रवर्तते ।
आज्ञा-च्छेदी मम द्वेषी मद्भक्तोऽपि न वैष्णवः ॥
(नारद नियमा. गो. रहस्य पृ. सं. ५८)

वर्णाश्रम धर्म मुमुक्षु वैष्णवों के लिये त्याज्य है-ऐसा कहना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि वर्णाश्रम धर्म का त्याग करने वाला नग्न व पातकी होता है--

ऋग्यजुः साम संज्ञेयं त्रयी वर्णावृतिर्द्विज ! ।
एतामुज्झति यो मोहात् स नग्नः पातकी स्मृतः ॥
(नारद नियमा. गो. रहस्य. पृ. सं. ५८)

शास्त्र विधि को छोड़कर मनमानी करने वाला सिद्धि, सुख व परम गति को प्राप्त नहीं होता--

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य-व्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्त्तुमिहार्हसि ॥
(गीता. १६/२३-२४)

अतएव देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी ने भी शास्त्र रक्षण पर अधिक बल दिया है--भवतु निश्चय दाढ्यार्दूर्ध्वं शास्त्ररक्षणम् (ना. भ. सूत्र १२) अर्थात् विधि निषेध से अतीत एक मात्र श्री-

राधाकृष्ण युगल में अलौकिक प्रेम प्राप्त करने का मन में दृढ निश्चय कर लेने के पश्चात् भी शास्त्र की रक्षा करनी चाहिये। भगवदनुकूल शास्त्रोक्त नित्य, नैमित्तिक कर्म करते रहना चाहिये।

[१]स्वयं श्रीनिम्बार्क भगवान् ने ब्रह्मज्ञान का कारण शास्त्र को ही माना है। [२]श्री श्रीनिवासाचार्यजी ने शास्त्र का वेद अर्थ किया है, और सिद्धान्त पक्ष में वेद को ही ब्रह्मज्ञान के लिये प्रमाण कहा है। अनुमानादि अन्य प्रमाणों से उसकी असम्भवता प्रतिपादित की है। [३]वेदादि शास्त्र श्रीसर्वेश्वर प्रभु के निःश्वसित हैं, अतः ये अन्तरङ्ग हैं। अन्य कल्पित अनुमानादि बहिरङ्ग हैं। [४]ब्रह्म अन्तरङ्ग वेदादि शास्त्रों से ही जाना जा सकता है, बहिर्भूत अनुमानादि से नहीं--यह कहकर श्रीनिवासाचार्यजी महाराज ने ब्रह्मज्ञान के लिये वेदादि शास्त्रों को ही अन्तरङ्ग प्रमाण स्वीकृत किया है। [५]समस्त वेदों का साक्षात् अथवा परम्परा से परब्रह्म वासुदेव श्रीकृष्ण में ही समन्वय होता है, अतः ये ही जिज्ञासा के विषय हैं। इनका ही ज्ञान व शास्त्र प्रतिपादित नित्य व नैमित्तिक कर्मानुष्ठान रूप साधनों को भगवदाज्ञात्मक भजन रूप मान कर करते रहने से भगवद्भावापत्ति रूप मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भारद्वाज ऋषि ने अभिगमन, उपादान, इज्या, स्वाध्याय और ध्यानयोग के द्वारा निरन्तर साधना निरत रहते हुये कालयापन का निर्देश किया है--

---

१-ब्र. सू. १-१-३ का वेदान्त पारिजात सौरभ। २-ब्र. सू. १-१-३ का वेदान्त कौस्तुभ। ३-वृहदारण्य ४-५-११-४--वेदान्त कौस्तुभ। ५-ब्र. सू. १-१-४ का वे. पा. सौ. एवं वेदान्त कौस्तुभ।

कृत्वाभिगमनं पूर्वमुपादाय च सम्पदः ।
इष्ट्वाऽधीत्य च युञ्जानो भागैः कालं नयेद्यतिः ।।

(पञ्चकालानुष्ठान मीमांसा पृ. सं. १)

इसी को ध्यान में रखते हुए परम कारुणिक पूर्वाचार्य प्रवर जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज ने वैष्णवजनों के हितार्थ श्रीकृष्णाराधननिरूपण-प्रवण क्रमदीपिका नामक एक आगम-निबन्ध लिखा है, जिसमें श्रीनारद गौतम आदि ऋषियों द्वारा समुपदिष्ट निष्काम व सकाम उपासना पद्धति का साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया है--

गुरुचरणसरोरूहद्वयोत्थान महितः रजः कणकन्दि प्रणम्यमूर्द्धा ।
गदितमिह विविच्य नारदाद्यैर्यजनविधिं कथयामि शार्ङ्गपाणेः ।।

(क्रमदीपिका-पटल १ श्लोक. २)

उपासना की यह पद्धति श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय की प्राचीन परम्परा से प्राप्त अमूल्य निधि है, किन्तु पठन-पाठन का अभाव एवं शास्त्रीय वर्णाश्रम धर्म में अनास्था होने के कारण वैष्णव समाज इस अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय की प्रामाणिकता व रीति नीति से अनभिज्ञ होकर मनमानी उपासना की ओर अग्रसर होने लग गया है-इसी दुष्प्रवाह को रोकने एवं सम्प्रदाय की वेदशास्त्रानुगत पूवाचार्य समुपदिष्ट उपासना प्रणाली से वैष्णव मात्र को अवगत कराने के लिये अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के कृपापात्र शिष्य अधिकारी पं० श्रीलाडिलीशरणजी

ब्रह्मचारी न्याय व्याकरणशास्त्री काव्यतीर्थ ने आचार्यश्री की प्रेरणानुसार इस **नित्य कर्म पद्धति** का सम्पादन करके इसे सम्वत् १९९४ में प्रकाशित कराया था । इससे उपासक समाज का परम हित हुआ ।

अब यह सुलभ नहीं रही है । पुनः यह सर्वसाधारण को सुलभ होकर उपासना के परम्परानुगत शास्त्रीय मार्ग को प्रशस्त व आलोकित करे--इसी पावन विचारधारा से परम कारुणिक परमाराध्य **अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज** ने प्रस्तुत नित्य कर्म पद्धति का पुनः प्रकाशन अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति की ओर से कराया है । आशा है, वैष्णव समाज इसके सदुपयोग से लाभान्वित होगा ।

विनीत--
रामगोपाल शास्त्री
शिक्षामन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

अधिकारी पं० श्रीलाडिलीशरणजी ब्रह्मचारी

भारत की परम पावन सुरम्य धरा पर समय-समय पर विशिष्ट महापुरुष आविर्भूत होते रहते हैं । उत्तमश्लोक महापुरुष अपने पवित्र जीवन में कुछ ऐसे सर्वलोकोपकारक कार्य करते हैं जिससे उनके अनुपम आदर्शपूर्ण कार्यों से सभी को उत्तम प्रेरणा प्राप्त होती है । उनके लोकमङ्गल कृत्यों से सन्मार्ग दर्शन तथा अपने अतीत के गौरव की रक्षा होती है । ऐसे ही पुण्यश्लोक महापुरुषों में अ० पं० श्रीलाडिलीशरणजी ब्रह्मचारी थे जिन्होंने अपने स्वल्प जीवनकाल में ही काव्य-न्याय-व्याकरण-वेदान्तादि शास्त्रों का सम्यक् परिशीलन कर अर्थ पञ्चक निर्णय नित्य कर्मपद्धति आदि ग्रन्थों का आलेखन कर निम्बार्क-सम्प्रदाय की अनुपम सेवा की है ।

श्रीलाडिलीशरणजी का जन्म उत्तर प्रदेश के श्रीगंगा तट स्थित सुप्रसिद्ध औद्योगिक नगर कानपुर के ही निकटवर्ती किसी पवित्र नगर में कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में वि० सं० १९५५ में हुआ था । ये बड़े मेधावी थे, अपनी छात्रावस्था में ये विद्यालय में सभी छात्रों में श्रेष्ठ थे । हिन्दी अभ्यास के साथ-साथ इनकी श्रीभगवद्भक्ति की ओर अभिरुचि रहने लगी । तीव्र वैराग्य होने पर १६ वर्ष की आयु में ही ये घर को त्याग कर सद्गुरु की खोज में निकल पड़े । तीर्थयात्रा के प्रसङ्ग में दीर्घकाल के बाद इनको श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के एक सन्त के दर्शन हुए । ये सन्त निर्वानी अनी अखाड़ा के भी नागा रहे तथा बड़े सरल और उत्तम विचारवान् थे । इन्होंने श्रीलाडिलीशरणजी को छात्रावस्था में अपने ही साथ रखा और सन्त-महात्माओं की जमातों में भ्रमण कराया । तलवार--लाठी--पट्टा-बनेटी आदि कलाओं का भी

अभ्यास कराया । संस्कृत अध्ययन करने की विशेष अभिरुचि होने से इन्होंने जहाँ तहाँ संस्कृत विद्यालयों में रहकर संस्कृत का गहन अध्ययन किया तथा व्याकरण, न्याय, साहित्यादि ग्रन्थों का सम्यक् प्रकार से विशेष अनुशीलन किया । पश्चात् उपर्युक्त महात्मा से प्रेरित होकर ये श्रीवृन्दावन आगये । श्रीवृन्दावन में इन्होंने श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम प्रख्यात महामनीषी पण्डित-प्रवर श्रीअमोलकरामजी शास्त्री से निम्बार्क वेदान्त का अध्ययन किया । श्रीशास्त्रीजी से ही प्रेरित होकर सं० १६८६ या १६६० के लगभग अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद आकर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से विधिवत् श्रीगोपालमन्त्रराज की दीक्षा प्राप्त की । सम्वत् १६६१ में श्रीनिम्बार्क महासभा के संघटन, श्रीसुदर्शन मासिक पत्र के प्रकाशन आदि कार्यों में भाग लेने लगे । उन दिनों ये श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज रेतिया बाजार में तथा कभी-कभी श्री गिरिधारीजी की कुञ्ज में भी रहते थे । यहीं पर ब्रह्मचारी श्रीरामेश्वरशरणजी से इनका विशेष परिचय एवं सम्पर्क हो गया था । साम्प्रदायिक अनेक कार्यों एवं समस्याओं के समाधानार्थ ये दोनों परस्पर में सहयोगी रूप में कार्य किया करते थे । बंगाल के वर्द्धमान श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के सुप्रतिष्ठित स्थान के महन्त श्रीमनोहरशरणदेवजी महाराज की अभिलाषानुसार उन्हीं के श्रीमधुसूदन विद्यालय में प्राचार्य (प्रिन्सिपल) के रूप में वर्षों तक कार्य किया । यहीं पर इन्होंने पं० श्रीवीरेश्वरजी शास्त्री से नव्य न्याय का गम्भीर अध्ययन किया । श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के तत्कालीन अनेक विद्वानों से इनका विशेष सम्पर्क हुआ यथा--पं० श्रीअमोलक-

रामजी शास्त्री, पं० त्यागी श्रीविहारीदासजी, श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, म० श्रीभीमाचार्यजी शास्त्री, पं० श्रीकिशोरदासजी वेदान्त निधि, व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहान्त श्रीकाठिया बाबा श्री धनञ्जयदासजी महाराज, बाबा श्रीरामचन्द्रदासजी, पं० श्री-भागीरथजी झा, वै० श्रीउमाशङ्करजी द्विवेदी, श्रीदानविहारीलाल-जी, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी प्रभृति विद्वानों-सन्तों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के प्रचुर प्रचार-प्रसार में आप बड़े उत्साह पूर्वक लगे रहते थे । इनके इसी उत्साह को देखकर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्ण-शरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने अ. पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी, अ० श्रीनरहरिदासजी के साथ-साथ वि० सं० १९९४ में श्रीवृन्दा-वन कुम्भावसर पर इनको भी अधिकारी पद पर नियुक्त किया । इन्होंने इस पद पर रहते श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय में अध्यापन कार्य भी कराया । आचार्यपीठ के प्रचारादि कार्यों में राजा-महाराजाओं, जागीरदारों के यहाँ जा जाकर सम्पर्क किया। आचार्यपीठ के उत्सव-महोत्सवों में म. पं. श्रीव्रजविहारीदासजी सुपटा एवं पं. श्रीदेवकीनन्दनजी के साथ-साथ रहकर बड़ी तत्परता से कार्य करते थे। आचार्यश्री की पावन सन्निधि में रहकर ये अधिकारीत्रयी अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी, अ. श्रीनरहरिदासजी, अ. श्रीलाडिलीशरणजी समस्त व्यवस्थादि कार्यों में सेवा निरत रहते थे । उन दिनों अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी उदयपुर में रहकर **उदय** मासिक पत्र का सम्पादन करते थे । वि. सं. १९९९ के चैत्र मास में श्री वियोगीजी को अधिकारी पद पर नियत किया । वि. सं. २००० में बड़े महाराजश्री के परमधामवास

के पश्चात् चारों ही अधिकारी महानुभाव बड़ी ही निष्ठा के साथ आचार्यपीठ के विभागानुसार सेवा में संलग्न हुए ।

पीठस्थ प्रबन्ध विभाग में अ. श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी एवं प्रचार विभाग में अ. पं. श्रीव्रजवल्लभशरणजी, कृषि विभाग में अ. श्रीनरहरिदासजी, श्रीवृन्दावनस्थ मन्दिर कुञ्जों में व्यवस्थार्थ अ. श्रीलाडिलीशरणजी को बड़े महाराजश्री द्वारा बनाये ट्रस्ट द्वारा यह कार्य सम्पादित हुआ । वर्तमान आचार्य श्रीचरण की उस समय १४ वर्ष की अवस्था थी इस दृष्टि से महाराजश्री ने केवल वर्तमान आचार्यश्री के साबालिक होने तक के लिए ट्रस्ट निर्धारित किया था जो आगे चलकर वर्तमान आचार्य चरणों के साबालिक होने पर स्वतः ही निरस्त हो गया । अस्तु- वर्तमान आचार्यश्री के अध्ययनकाल में ये श्रीवृन्दावन कुञ्ज की व्यवस्था के साथ-साथ आचार्यश्री के अध्ययन सम्बन्धी व्यवस्था भी करते थे । योगवशात् मलेरिया की भीषण व्याधि से पीड़ित होने के कारण ये श्रीवृन्दावन से वि. सं. २००० आश्विन मास में आचार्यपीठ आ गये । यहाँ पर चिकित्साओं के कराने पर भी इनकी व्याधि का शमन नहीं हुआ और दीर्घकालिक व्याधि के बाद श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु की पावन सन्निधि में वि. सं. २००० के माघ मास में इन्होंने अपने पाञ्चभौतिक शरीर का त्याग कर श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति की ।

आपके द्वारा संकलित इस नित्य कर्म पद्धति ग्रन्थ से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के भावुक भक्तजन ही नहीं अपितु समस्त वैष्णव समाज पूर्ण लाभान्वित होगा, ऐसी आशा है ।

मिति आषाढ शु. १५ श्रीगुरुपूर्णिमा --पं० गोविन्ददास सन्त

सोमवार वि. सं. २०४३ प्रचारमन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

* विषय--सूची *

विषय	पृष्ठ संख्या

श्रीसर्वेश्वरो जयति

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अथ श्रीनिम्बार्कीय--

नित्यकर्मपद्धति

श्रीहरिगुरु भक्तिपरायण, परमतत्त्व श्रीभगवद्भावापत्ति-मोक्षाभिलाषी उपासक को रात्रि के शेष पहर (४ बजे) ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने मस्तक में नीचे लिखे हुये श्लोक से श्रीगुरु-देव का स्मरण करना चाहिये--

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं स्मरामि॥

अर्थ-आनन्द स्वरूप और शिष्य को आनन्दित करने वाले, प्रसन्न ज्ञानस्वरूप, अपने भाव से युक्त योगियों में श्रेष्ठ पूजनीय संसाररूपी रोग के वैद्य स्वरूप श्रीगुरुदेव को मैं नित्य स्मरण करता हूँ ।

इसके बाद स्वइष्ट वामाङ्ग में सर्वेश्वरी श्रीराधा से सुशोभित भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का नीचे लिखे हुए श्लोक से स्मरण करे--

नमामि राधापतिपादपल्लवं वदामि राधापतिनामनिर्मलम् ।
भजामि राधापतितत्त्वमक्रियं करोमि राधापतिसेवनं मुदा ॥

अर्थ-श्रीराधिकारमण के पाद पल्लव को नमस्कार करता हूँ। पवित्र श्रीराधाकृष्ण का नाम उच्चारण करता हूँ। श्रीराधापति श्रीकृष्ण के अक्रिय (नित्य निर्विकार) तत्त्व का भजन करता हूँ। एवं प्रीति पूर्वक श्रीराधापति का सेवन करता हूँ। इस तरह श्रीकृष्ण का स्मरण कर उठे, और उठकर नीचे लिखे श्लोक से पृथ्वी को प्रणाम करे--

समुद्रमेखले ! देवि ! पर्वतस्तन मण्डले ! ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

अर्थ-समुद्रमेखले ! हे देवि ! हे पर्वतस्तनमण्डले ! हे विष्णुपत्नि ! तुम्हारे लिये नमस्कार है, मेरे पाद स्पर्श को क्षमा करना। इस तरह पृथ्वी की प्रार्थना कर श्वास के अनुसार (अर्थात् उस समय नाक का जो स्वर चलता हो उसके अनुसार) पैर पृथ्वी पर धरे। इसके बाद शौच को जाय, जाने से पहिले शौच के लिये नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका को खंती या खुरपी से खोद कर लेवे।

मन्त्र--येन त्वां खनति ब्रह्मा येन त्वां रुद्रकेशवौ ।
तेन त्वाहं खनिष्यामि शुद्ध्यर्थं करपादयोः ॥

अर्थ-जिससे तुमको ब्रह्मा, शिव और केशव खोदते हैं, उसी से मैं हाथ और पैर शुद्ध करने के लिये खोदता हूँ।

फिर शौच करने के लिये नीचे लिखे मन्त्र से जल लेवे।

मन्त्र--सलिलस्य मुखं दृष्ट्वा विष्णुरूपं नमोस्तु ते ।
अहं गृह्णामि शौचार्थं ह्यापोदेव्यः पुनन्तु माम् ।।

अर्थ-जल का मुख देखकर हे विष्णुस्वरूपजल ! तुमको नमस्कार है, शौच के लिये मैं तुमको ग्रहण करता हूँ । हे आपः ! मुझे पवित्र कीजिये । जल लेकर यज्ञोपवीत को दाहिने कान पर चढाकर (उत्तरीय वस्त्र) गंमछा से शिर बाँधकर सूर्य को दाहिनी तरफ लेकर नीचे लिखे हुये मन्त्र से पृथ्वी पर रहने वाले देवता यक्ष गंधर्वादिकों को हटाने के लिये तीन बार ताली बजावे ।

मन्त्र--उत्तिष्ठन्तु सुराः सर्वे यक्षगंधर्वकिन्नराः ।
पिशाचा गुह्यकाश्चैव मलमूत्रं करोम्यहम् ।।

अर्थ-हे समस्त देवताओं ! हे यज्ञ ! गन्धर्व, किन्नरो, हे पिशाच ! गुह्यको, तुम अब यहाँ से उठो मैं मलमूत्र करता हूँ ।

इसके बाद शौच कर हाथ पैर शुद्ध करे, मृत्तिका लगावे, उसका नियम यह है कि-एक बार लिङ्ग में, तीन बार गुदा में, दश बार बाम हाथ में, सात बार दोनों हाथों में । एवं तीन-तीन बार दोनों पैरों में, मृत्तिका लगाकर हाथ धोवे । इस तरह हाथ पैर शुद्ध करके नीचे लिखी हुई प्रभातियों (दंतौन) में से कोई एक प्रभाती (दन्त धावन) नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर वृक्ष से लेवे--

खदिरश्च करञ्जश्च कदम्बश्च वटस्तथा ।
चिञ्चिणी वेणुष्पृठश्च आम्रो निम्बस्तथैव च ।।

अपामार्गश्च विल्वश्च अर्कश्चौदुम्बरस्तथा ।
एते प्रशस्ताः कथिता दन्तधावनकर्मणि ॥

प्रभाती (दन्तधावन) तोड़ने का मन्त्र--

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधाञ्च तन्नो देहि वनस्पते ! ॥

अर्थ-हे वनस्पते ! हमको आयु, बल, यश, ब्रह्मचर्य, प्रजा, पशु, धन, ब्रह्मज्ञान और बुद्धि दीजिये । यह मन्त्र पढ कर ऊपर लिखी हुई किसी एक वृक्ष से प्रभाती तोड़ कर पहिले १६ बार कुल्ला कर उत्तर या पश्चिम की तरफ मुख करके प्रभाती से खूब अच्छी तरह दाँतों को परिष्कार करे, इसके बाद फिर १६ बार कुल्ला करके मुख धोवे । इस तरह हाथ मुख धोकर स्नान करने के लिये सरोवर अथवा समीपवर्ती नदी या कूप पर जावे, और वहाँ पर हाथ-पैर धोकर संकल्प करे--

श्रीमद्ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवराह-कल्पे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्त्तैकदेशे अमुकदेशे मासानां मासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकऋतौ अमुकनामदेवशर्माहं श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानमहं करिष्ये ।

इस तरह संकल्प कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ कर सिर पैर पर्यन्त मृत्तिका लगाकर सूर्यमण्डल की तरफ देख कर प्रार्थना करे ।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ! ।
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ! ।।

हे रवे ! ब्रह्माण्ड के भीतर समस्त तीर्थ आपकी किरणों से मिले हुये हैं । हे देव दिवाकर ! उन सत्य किरणों से मुझे तीर्थों के जल को दीजिये । ऐसे प्रार्थना कर अंकुश मुद्रा के द्वारा सूर्यमण्डल के समस्त तीर्थों का नीचे लिखे हुये मन्त्र से आवाहन करे ।

गंगे ! च यमुने चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे!सिन्धु! कावेरि जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु !!

इस मन्त्र से तीर्थों का आवाहन कर उनका पूजन करे, एवं नमस्कार कर मूलमन्त्र को पढता हुआ स्नान करे । इस तरह स्नान कर जल से ही तिलक और आचमन कर मूलमन्त्र को बोलकर **श्रीराधाकृष्णं तर्पयामि** ऐसा कहकर तीन अञ्जलि जल तर्पण करे । फिर जल से बाहर होकर पवित्र वस्त्र पहिन कर अपने स्थान पर आकर नीचे लिखे मन्त्र को पढकर आसन बिछा कर तिलक को कर वैदिकी, या अधिकारानुसार तान्त्रिकी सन्ध्या करे ।

ॐ पृथिवीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छंदः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ।

इस मन्त्र के पश्चात्--

पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

यह मन्त्र पढ़ आसन बिछाकर आधार शक्ति कमलासनाय नमः यह पढ़ कर धेनुमुद्रा दिखाकर आसन परं बैठ कर तर्जनी अंगुली से पृथिवी को स्पर्श कर-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विध्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

यह मन्त्र पढ़ता हुआ बाँये पाँव का अँगूठा पकड़ कर उसी पाँव की ऐढ़ी से तीन बार भूमि में ठोकर मार कर पूर्वमुख स्वस्तिकादि आसन से बैठ कर निम्नलिखित मन्त्रों को बोलता हुआ द्वादश तिलक करे ।

ॐ केशवाय नमः ललाटे १ ॐनारायणाय नमः उदरे २ ॐ माधवाय नमः वक्षस्थले ३ ॐ गोविन्दाय नमः कण्ठकूपे ४ ॐ विष्णवे नमः दक्षिण कुक्षौ ५ ॐ मधुसूदनाय नमः दक्षिण बाहौ ६ ॐ त्रिविक्रमाय नमः दक्षिण कन्धरे ७ ॐ वामनाय नमः वामपार्श्वे ८ ॐ श्रीधराय नमः वामबाहौ ९ ॐ हृषीकेशाय नमः वामकन्धरे १० ॐ पद्मनाभाय नमः पृष्ठे ११ ॐ दामोदराय नमः कट्याम् १२

इस तरह द्वादश तिलक करने के बाद चक्र और शंख की पञ्चोपचारों द्वारा निम्नलिखित मन्त्र से पूजा कर दाहिने हाथ के मूल में चक्र और बाँये हाथ के मूल में शंख निम्नलिखित मन्त्र से लगावें । चक्र और शंख के आवाहन और पूजन का मन्त्र--

ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय निर्णाशितसकल-रिपुध्वजाय भगवन्नारायणकरोरुहाम्भोरुहस्पर्श-दुर्ललिताय एह्येहि त्वं सहस्रार चक्रराज सुदर्शन ! यज्ञ-भागं प्रगृह्य स्वपूजां चैव नमो नमः ॥

ॐ नमो भगवते पांचजन्याय विष्णुशंखाय गम्भीरधीरध्व-न्याकुलीकृतकौरववाहनीनाथाय त्रिरेखादक्षिणावर्त्ताय त्रिप्रशस्ताय एह्येहि पाञ्चजन्य त्वं नारायण करस्थित यज्ञभागं प्रगृह्य स्वपूजा-ञ्चैव नमो नमः ॐ रं गं मं नं पाञ्चजन्याय नमः ।

चक्र धारण करने का मन्त्र--

सुदर्शन महाबाहो ! सूर्यकोटिसमप्रभ ।
अज्ञानतिमिरांधानां विष्णोमार्ग प्रदर्शय ॥

शंख धारण करने का मन्त्र--

पाञ्चजन्य निजध्वानध्वस्तपातकसंचय ।
पुनीहि पापिनं घोरं संसारार्णवपातिनम् ॥

इस तरह तिलक और शंख-चक्र धारण कर--

ॐ श्रीगुरुभ्योनमः, परमगुरुभ्योनमः, परात्परगुरुभ्योनमः, अस्मद्गुरुभ्योनमः ।

इन मन्त्रों से श्रीहंस भगवान् से लेकर अपने गुरु पर्यन्त सबको नमस्कार कर सन्ध्या का संकल्प करे ।

अद्य...श्रीभगवदाज्ञापरिपालनरूप प्रातः भगवत्कैंकर्यकर्मरूप भगवत्प्रीत्यर्थं भगवत्कारितं सन्ध्योपासन कर्माहं करिष्ये ।

इसके बाद बांये हाथ में तीन से ज्यादा कुश और पवित्रि धारण करे और दाहिने हाथ में तीन कुश धारण कर ॐकार सहित गायत्री मन्त्र पढ़ कर शिखा में गांठ लगावे । फिर ईशान कोण की तरफ मुख कर ॐ विष्णु यह बोल कर तीन बार आचमन कर-

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्य-जायत ततः समुद्रोऽर्णवः । समुद्रादर्ण-वादधि संवत्सरो अजायत । अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवञ्चपृथिवीञ्चांतरिक्षमथोस्वः ।

इस मन्त्र से फिर आचमन करे । इसके बाद चारों तरफ जल का मण्डल बनाकर प्रणव सहित गायत्री मन्त्र को बोलकर अपनी रक्षा करे । फिर नीचे लिखे हुए चारों विनियोगों को पढ़कर तीन बार प्राणायाम करे ।

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीछंदोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः । सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतममात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पंक्तित्रिष्टुब्जगत्य-श्छंदांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवताः अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेवता अग्निर्मुख-मुपनयने प्राणायामे विनियोगः । शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः ।

इस तरह ऋष्यादिकों का स्मरण कर आसन बांध कर आंखे मीच कर और मौन होकर दाहिने स्वर को अंगूठे से दबाकर बांये स्वर से श्वास को चढ़ावे । और श्रीराधाकृष्ण के चरणारविन्दों का ध्यान करे फिर मध्यमा और अनामिका से बांये स्वर को भी रोक कर श्रीराधाकृष्ण के वक्षस्थल का ध्यान करे फिर दाहिने स्वर को छोड़ता हुआ श्रीराधाकृष्ण के मुखारविन्द का ध्यान करे । इस तरह इन तीनों प्राणायामों का नाम पूरक, कुम्भक और रेचक है ।

इन त्रिविध प्रत्येक प्राणायाम में--

ॐभूः ॐ भुवः ॐस्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योतिरसोमृतंब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

इस मन्त्र का तीन बार जप करे । इसके बाद-

सूर्यश्चमेति मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

इस विनियोग को बोलकर--

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्यु कृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्यापापमकार्षं मनसा, वाचा, हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण, शिस्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़ कर सवेरे आचमन करे, और मध्याह्न सन्ध्या में-

आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुब्छंदः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

इस विनियोग को पढ़े और--

ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्, पुनन्तु-ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्, यदुच्छिष्टमभोज्यञ्च यद्वादु-श्चरितं मम । सर्वं पुनन्तुमामापोऽसताञ्च प्रतिग्रह ःं स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़कर आचमन करे, और सायं सन्ध्या में-

अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छंदोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

इस विनियोग को पढ़े । और

ॐ अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्ष मनसा, वाचा, हस्ताभ्यां पद्भ्यां मुदरेण, शिश्ना, अह्नस्तद- वलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि, इदमहममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़ कर आचंमन करे । इसके बाद

आपोहिष्ठेत्यादित्रृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः ।

इस विनियोग को पढ़ कर, नीचे लिखे हुए सात मन्त्रों को पढ़ता हुआ कुश से शिर पर जल का अभिषेक कर आठवें मन्त्र को पढ़ कर जमीन पर और ९ वें मन्त्र को पढ़ कर फिर सिर पर जल का अभिषेक करे (अर्थात् कुश से जल छिड़के)

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवः १, ॐ तानऊर्जेदधातनः २, ॐ महेरणाय चक्षसे ३, ॐ यो वः शिवतमो रसः ४, ॐ तस्य भाजयते हनः ५, ॐ उशतीरिवमातरः ६, ॐ तस्मा अरङ्ग मामवः ७, ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथः ८, ॐ आपोजनयथा चनः ९ ।

इसके बाद हाथ में जल लेकर तीन बार नीचे लिखे हुये मन्त्र को पढ़कर उस जल को माथे पर डाले ।

द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्रऋषिरनुष्टुप्- छन्दः आपो देवतासौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।

इस विनियोग को बोलकर

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुधन्तु मैनसः ।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर उस जल को माथे पर छिड़के । इसके बाद

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवताऽश्वमेधावभृथे विनियोगः ।

इस विनियोग मन्त्र को बोलकर

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रोऽर्णवः समुद्रार्णवादधि सम्वत्सरोऽजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर हाथ में जल लेकर नासिका में लगावे , और उसके द्वारा वाम कुक्षि में रहने वाले पाप बाहर

आगये, ऐसा ध्यान करता हुआ जल को अपने बांई तरफ अस्त्रायफट् यह बोलकर छोड़ देवे । इसके बाद

अन्तश्चरसीतितिरश्चीनऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः । इस विनियोग को बोलकर **ॐ अन्तश्च-रसिभूतेषु गुहायां विश्वतोमुख। त्वं यज्ञस्त्वंवषट्कारआपोज्योति-रसोमृतम् ।**

इस मन्त्र को पढ़कर हाथ में लिये हुये जल से आचमन करे । इसके बाद उठकर गायत्री मन्त्र पढ़कर पुष्प, चन्दनमिश्रित जलांजलि सूर्य के अन्तर्यामी भगवान् को देवे, फिर पृथ्वी पर एड़ी नहीं टिके, ऐसे पैरों से अथवा एक ही पैर से सूर्य के सन्मुख खड़ा होकर सवेरे और सन्ध्या को हाथ जोड़कर और मध्याह्न में हाथों को ऊपर उठाकर नीचे लिखे हुये मन्त्रों को पढ़ता हुआ सूर्य के अन्तर्यामी भगवान् का उपस्थान करे ।

उद्वयमित्यस्यहिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रासूर्यमगन्मज्ज्योतिरुत्तमम् । उदुत्यमिति प्रस्कण्वऋषिगायत्री छन्दः सूर्यो देवता सुर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् । चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषि-स्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ चित्रं देवाना-मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य

आत्माजगतस्थुषश्च । तच्चक्षुरितिदध्यङ्ङाथर्वणऋषि-रक्षरातीत पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शत   शृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनास्याम शरदः, शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

इसके बाद विश्वामित्रऋषये नमः शिरसि गायत्री छन्दसे नमो मुखे सवित्रे देवतायै नमः हृदि । ऋष्यादिन्यास कर नीचे लिखे अनुसार षडङ्गन्यास करे ।

ॐ हृदयाय नमः ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॐ भुवः शिखायै-वषट् ॐ स्वः कवचायहुँ ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट् ॐ भूर्भुव स्वः अस्त्राय फट् ।

नीचे लिखे ३ विनियोगों को बोले ।

ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो भगवदाज्ञापरिपालनार्थं भगवत्प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । त्रिव्याहृतीनां प्रजापति-ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांस्यग्निवाय्वा-दित्यादेवता भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

इन विनियोगों को बोलकर नीचे लिखे हुए श्लोकों से गायत्री का ध्यान करे ।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा । श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्चभूषिता । आदित्य-मण्डलस्था च ब्रह्मलोकगता-थवा । अक्षसूत्रधरादेवी पद्मासनगता शुभा ।

ध्यान कर नीचे नीचे मन्त्र से गायत्री मन्त्र का आवाहन करे ।

तेजोसीति देवाऋषयः गायत्री छन्दः शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

यह विनियोग बोलकर

ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि प्रियं देवाना-मनाधृष्टं देवयजनमसि ।

इस मन्त्र से आवाहन करे

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य-पद्यसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयायदर्शतायपदाय परो-रजसे सावदोम् ।

इस मन्त्र से उपस्थान कर प्रातः सन्ध्या करने के समय पूर्व की तरफ मुख करके जप करे, मध्याह्न में सूर्य की तरफ मुख करके

और सायंकाल में पश्चिम की तरफ मुख करके १०८ बार अथवा २८ बार गायत्री मन्त्र का जप करे । जप शेष होने पर **भगवति देवि क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ** यह बोलकर गायत्री का विसर्जन करे । इस तरह त्रैवर्णिक वैष्णवों को अपने-अपने वर्ण का कर्त्तव्य पालन करना चाहिये । तथा भगवदाज्ञा का समादर करते हुए वैदिकी सन्ध्या शेष होने पर, तान्त्रिकी सन्ध्या करे । ॐ नमः बोलकर दाहिने हाथ में जल लेकर बांये हाथ से ढाक कर मूल मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित कर पीवे । इसके बाद तीन बार ॐ विष्णु ॐ विष्णु ॐ विष्णु बोलकर आचमन करे, फिर दाहिने हाथ में जल लेकर बांये हाथ से ढक कर मूलमन्त्र को एक बार पढ़कर उस जल को बांये हाथ में लेकर उससे माथे पर छिड़के फिर उसी तरह जल लेकर बांये हाथ से ढक कर एक बार मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित कर नाक के दाहिने छिद्र से सूँघ कर उस जल से शरीर के भीतर के सब पाप धो दिये, और वही कृष्ण वर्ण होकर बांये छिद्र से निकल कर हाथ में आ गये, ऐसा चिन्तवन कर अपने बाँई तरफ अस्त्रायफट् यह बोलकर फैंक दे । इसके बाद मूलमन्त्र के अन्त में

सूर्यमण्डलस्थाय श्रीकृष्णाय इदमर्ध्यं समर्पयामि ।

ऐसा बोलकर सूर्य मण्डल स्थित श्रीकृष्ण को तीन अञ्जलि जल देवें । इसके बाद गोपाल गायत्री का जप स्वशक्ति अनुसार श्रीगोपाल मन्त्र से दीक्षित समस्त वैष्णव अवश्य करें ।

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्, ॐ गोपालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

विद्महे तर्जनीभ्यां नमः । गोपीजनवल्लभाय मध्यमाभ्यां नमः । धीमहि अनामिकाभ्यां नमः । तन्नः कृष्णः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । प्रचोदयात् करतलकर पृष्टाभ्यां नमः । ॐ गोपालाय हृदयाय नमः । विद्महे शिरसे स्वाहा । गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट् । धीमहि कवचाय हुँ । तन्नः कृष्णः नेत्रत्रयाय वौषट् । प्रचोदयात् अस्त्रायफट् ।

ऐसे कर न्यास और अङ्गन्यास कर १०८ अथवा २८ बार जाप करे । यह तीनों काल में सन्ध्या करने की विधि है । जप शेष होने पर जल के बीच अष्टदल कमल बनाकर बीच में काम बीज लिख कर--

ॐ गुरूँस्तर्पयामि, परमगुरूँस्तर्पयामि, महागुरूँस्तर्पयामि, अस्मद्गुरूँस्तर्पयामि, नारदादि देवर्षींस्तर्पयामि, पूर्वसिद्धांस्तर्पयामि, भागवतांस्तर्प-यामि, ॐ नमोभगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मने योगपद्मपीठात्मने नमः योग पीठात्मकं श्रीकृष्णं तर्पयामि ।

इस तरह कर्णिका में श्रीकृष्ण का ध्यान कर मूलमन्त्र को बोल कर उसके अन्त में **श्रीकृष्णं तर्पयामि** यह बोलकर २८ अञ्जलि जल से श्रीकृष्ण का तर्पण करे । इस तरह तर्पण शेष हो

जाने पर **अस्त्राय फट्** इस मन्त्र से हाथों को शुद्ध कर गन्ध और पुष्प से हाथों को सुगन्धित करके श्रीगोपाल मन्त्र का जप और श्रीगोपालजी की पूजा के योग्य अपने शरीर को बनाने के लिये भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, मातृकान्यास, केशवादि मातृकान्यास, तत्वन्यास, ऋषिन्यास, करन्यास, अङ्गन्यास, पदन्यास, वर्णन्यास प्रभृति नीचे लिखे क्रम से करे।

श्रीराधकृष्णाराधनयोग्यतासिद्ध्यर्थं भूत शुद्धि-महंकरिष्ये।

इस तरह संकल्प करके कच्छपी मुद्रा से हृदय में स्थित जीव ज्योति को परंब्रह्म में लीन करके बाँई कुक्षि में कृष्ण वर्ण पाप पुरुष का ध्यान कर **यं** इस वायु बीज को १६ बार जपता हुआ बाँये स्वर से स्वांस को चढ़ावे, फिर स्वांस रोक कर इसी वायु बीज को ६४ बार जपे, फिर ३२ बार जप कर दाहिने स्वर से छोड़ दे। फिर दाहिने स्वर से **रं** इस अग्नि बीज को १६ बार जप कर स्वांस चढ़ावे, ६४ बार जप कर स्वांस रोके, ३२ बार जप कर बाँये स्वर से छोड़े। और मन ही मन में ध्यान करे कि पाप जल गया, फिर बाँये स्वर से स्वांस को खींचता हुआ **ठं** इस चन्द्र बीज को १६ बार जपे, फिर **वं** इस वरुण बीज को ६४ बार जप का स्वांस रोके और मन ही मन में विचार कि अमृत वृष्टि से दिव्य शरीर उत्पन्न हो गया। फिर **लं** इस पृथ्वी बीज को ३२ बार जप का दाहिने स्वर से स्वांस को छोड़े, और भावना करे कि वह दिव्य शरीर पृथ्वी के समान दृढ़ हो गया है। इस तरह भूत शुद्धि कर प्राण प्रतिष्ठा करे।

अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेशादि ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छंदांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं प्राणप्रतिष्ठार्थे विनियोगः।

पहिले इस विनियोग को बोलकर छाती में हाथ लगा कर

ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम प्राणाः मम इन्द्रियाणि मम वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर १६ बार ॐ का जप कर अपने शरीर के १६ संस्कार की भावना करे । इस तरह प्राण प्रतिष्ठा करके मातृका न्यास करे, जिसकी विधि है कि प्रत्येक मन्त्र बोल कर अंगुष्ठा और अनामिका अंगुली से उन-उन स्थानों का स्पर्श करे ।

अस्य श्रीमातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः श्रीकृष्णाराधनांगत्वे विनियोगः ।

यह विनियोग बोलकर कण्ठस्थ षोडश दल पद्म में

अं नमः। आं नमः । इं नमः । ईं नमः । उं नमः। ऊं नमः । ऋं नमः । ॠं नमः । लृं नमः । लॄं नमः । एं नमः । ऐं नमः । ओं नमः । औं नमः । अं नमः । अः नमः ।

हृदयस्थित द्वादश दल पद्म में--

कं नमः । खं नमः । गं नमः । घं नमः । ङं नमः । चं नमः । छं नमः । जं नमः । झं नमः । ञं नमः । टं नमः । ठं नमः ।

नाभिस्थित दश दल पद्म में

डं नमः । ढं नमः । णं नमः । तं नमः । थं नमः । दं नमः । धं नमः । नं नमः । पं नमः । फं नमः ।

लिङ्गस्थित षट् दल कमल में

बं नमः । भं नमः । मं नमः । यं नमः । रं नमः । लं नमः ।

आधारस्थित चार दल कमल में

वं नमः । शं नमः । षं नमः । सं नमः ।

भ्रूमध्यस्थित दो दल पद्म में

हं नमः । क्षं नमः ।

यह अन्तर्मातृका न्यास है इस तरह अन्तर्मातृका न्यास करके वहिर्मातृका न्यास करे, उसकी विधि यह है--नीचे लिखे मन्त्रों को बोलता हुआ अंगूठा और अनामिका से उन-उन अङ्गों का स्पर्श करे । अं नमः ललाटे । आं नमः मुखवृत्ते । इं नमः दक्षिण नेत्रे । ईं नमः वाम नेत्रे । उं नमः दक्षिण श्रोत्रे । ऊं नमः वाम श्रोत्रे । ऋं

नमः दक्षिण नासापुटे । ऋं नमः वाम नासापुटे । लृं नमः दक्षिण गंडे । लॄं नमः वाम गंडे । एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ऐं नमः अधरोष्ठे । ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ । औं नमः अधो दन्तपंक्तौ । अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे । कं नमः दक्षि बाहु मूले । खं नमः कूपरि । गं नमः दक्षिण मणिबन्धे । घं नमः दक्षिण अंगुलिमूले । ङं नमः अंगुल्यग्रे । चं नमः वाम बाहुमूले । छं नमः वाम कूपरि । जं नमः वाम मणिबन्धे। झं नमः वाम अंगुलिमूले । ञं नमः अंगुल्यग्रे । टं नमः दक्षिण पाद मूले । ठं नमः जानुनि । डं नमः गुल्फे । ढं नमः पादांगुलि मूले । णं नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे । तं नमः वामपादमूले । थं नमः वाम-जानुनि । दं नमः वामगुल्फे । धं नमः वामपादांगुलिमूले । नं नमः वामपादांगुल्यग्रे । पं नमः दक्षिणपार्श्वे । फं नमः वामपार्श्वे । बं नमः पृष्ठे । भं नमः नाभौ । मं नमः उदरे । यं नमः वक्षसि । रं नमः दक्षिण कुक्षौ । लं नमः ककुदि । वं नमः वाम कुक्षौ । शं नमः हृदादि दक्षिण वाहौ । षं नमः हृदादि वाम वाहौ । सं नमः हृदादि दक्षिण पाद पर्यन्तम् । हं नमः हृदादि वामपादपर्यन्तम् । लं नमः हृदादि जठरान्तम् । क्षं नमः हृदादि मुखांत पर्यन्तम् । इस तरह खाली मातृकान्यास करके केशवादि मातृका न्यास करे । यदि लक्ष्मी प्राप्ति की इच्छा हो तो सब में श्रीः बीज लगा कर न्यास करे ।

अथ केशवादिमातृकान्यासस्य प्रजापतिऋषिः गायत्री छन्दः श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता हलोबीजानि स्वरसंग्रहः शक्तिः देहशुद्धिपूर्वकपुरुषार्थचतुष्टये विनियोगः ।

यह विनियोग बोल कर नीचे लिखे मन्त्रों से न्यास करे । अं केशवाय कीर्त्यै नमः ललाटें । आं नारायणायकान्त्यै नमः मुखवृत्ते। इं माधवाय तुष्ट्यै नमः दक्षिणे नेत्रे । ईं गोविन्दाय पुष्ट्यै नमः वाम नेत्रे । उं विष्णवे धृत्त्यै नमः दक्षिण कर्णे । ऊं मधुसूदनाय शान्त्यै नमः वाम कर्णे । ऋं त्रिविक्रमायक्रियायै नमः दक्षिणनासापुटे । ॠं वामनाय दयायै नमः वाम नासापुटे । लृं श्रीधराय मेधायै नमः दक्षिण गंडे । लॄं हृषीकेशाय हर्षायै नमः वाम गंडे । एं पद्मनाभाय श्रद्धायै नमः उर्ध्वोष्ठे । ऐं दामोदराय लज्जायै नमः अधरोष्ठे । ओं वासुदेवाय लक्ष्म्यै नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ । औं संकर्षणाय सरस्वत्यै नमः अधो दन्तपंक्तौ । अं प्रद्युम्नाय प्रीत्यै नमः शिरसि । अः अनिरुद्धाय रत्यै नमः मुखे । कं चक्रिणे जयायै नमः दक्षिण वाहौ । खं गदिने दुर्गायै नमः दक्षिण कूर्परि । गं शार्ङ्गिणे प्रभायै नमः दक्षिणमणिबन्धे । घं खड्गिने सत्यायै नमः दक्षिणांगुलिमूले । ङं शंखिने चण्डायै नमः दक्षिणांगुल्यग्रे । चं हलिने वाण्यै नमः वामवाहुमूले । छं मुसलिने विलासिन्यै नमः वामकूर्परि । जं शूलिने विजयायै नमः वाममणिबन्धे। झं पाशिने विरजायै नमः वामांगुलिमूले । ञं अंकुशिने विश्वायै नमः वामांगुल्यग्रे । टं मुकुन्दाय विमदायै नमः दक्षिणपादमूले । ठं नन्दजाय सुनन्दायै नमः जानुनि । डं नन्दिने स्मृत्यै नमः गुल्फे ।ढं नारायणाय ऋद्ध्यै नमः दक्षिण पादांगुलिमूले । णं नरक जिते स्मृद्ध्यै नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे । तं हरये शुद्ध्यै नमः वामपाद मूले । थं कृष्णाय वुद्धैय नमः वाम जानुनि । दं सत्याय मुक्त्यै नमः वाम गुल्फे । धं सात्वताय सत्यै नमः वामपादांगुलिमूले । नं शौरये क्षमायै नमः वामपादांगुल्यग्रे । पं परशुरामाय रमायै नमः दक्षिण पार्श्वे । फं

जनार्दनाय उमायै नमः वाम पार्श्वे । बं भूधराय क्लेदिन्यै नमः पृष्ठे । भं विश्वादि मूर्तये क्लिन्नायै नमः नाभौ । मं वैकुण्ठाय वसुदेवायै नमः उदरे । यं त्वगात्मने पुरुषोत्तमाय वसुधायै नमः वक्षसि । रं अमृतात्मने वलिने परायै नमः दक्षिणकुक्षौ । लं मांसात्मने वलानुजाय परायणायै नमः ककुदि । वं मेदात्मने वलाय सूक्ष्मायै नमः वाम कुक्षौ । शं अस्थ्यात्मने वृषघ्नाय संध्यायै नमः हृदयादि दक्षिणहस्ते। षं मज्ञात्मने वृषाय प्रज्ञायै नमः हृदयादि वामहस्ते । सं शुक्रात्मने हंसाय प्रभायै नमः हृदियादि दक्षिणपादे । हं प्राणात्मने वराहाय निशायै नमः हृदयादि वामपादे । लं शक्त्यात्मने विमलाय अमोघायै नमः हृदयादि जठरावधि । क्षं क्रोधोत्मने नृसिंहाय विद्युते नमः हृदयान्मुखावधि ।

श्लोक--केशवादिरयंन्यासो न्यासमात्रेण देहिनाम् ।
अच्युतत्वं ददात्येव सत्यं सत्यं न संशय ॥

यह केशवादि मातृकान्यास मात्र करने से मनुष्य को भगवान् के तुल्य बना देता है, यह सत्य है, इसमें सन्देह नहीं है ।

* अथ तत्त्व--न्यासः *

मं नमः पराय जीवात्मने नमः । भं नमः पराय प्राणात्मने नमः । इन दोनों मन्त्र से सर्व शरीर में न्यास करे । वं नमः पराय बुद्ध्यात्मने नमः । फं नमः पराय अहंकारात्मने नमः । पं नमः

पराय मन आत्मने नमः । इन तीनों मन्त्रों को हृदय में न्यास करे । नं नमः पराय शब्दात्मने नमः शिरसि । धं नमः पराय स्पर्शात्मने नमः मुखे । दं नमः पराय रूपात्मने नमः हृदि । थं नमः पराय रसात्मने नमः गुह्ये । तं नमः पराय गंधात्मने नमः पादयोः । णं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः । ढं नमः पराय त्वगात्मने नमः त्वचि । डं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षुषोः । ठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः रसनायां । टं नमः पराय घ्राणात्मने नमः घ्राणयोः । ञं नमः पराय वागात्मने नमः मुखे । झं नमः पराय पाण्यात्मने नमः हस्तयोः । जं नमः पराय पादात्मने नमः पादयोः । छं-नमः पराय पाय्वात्मने नमः गुदे । चं-नमः पराय उपस्थात्मने नमः उपस्थे । ङं-नमः पराय आकाशात्मने नमः मूर्ध्नि । घं-नमः पराय वाय्वात्मने नमः मुखे । गं-नमः पराय तेज आत्मने नमः हृदि । खं-नमः पराय अबात्मने नमः गुह्ये । कं-नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः पादयोः । शं-नमः पराय हृत्पुंडरीकात्मने नमः । हं-नमः पराय द्वादशकलाव्याप्तसूर्य्य-मण्डात्मने नमः । सं-नमः पराय षोडशकलाव्याप्तचन्द्रमण्डलाय नमः । रं-नमः पराय दशकलाव्याप्तवह्निमण्डलात्मने नमः । इन चार मन्त्रों को हृदय में न्यास करे । षं- नमः पराय श्रीवासुदेवाय परमेष्ठ्यात्मने नमः शिरसि । यं-नमः पराय संकर्षणाय पुरुषात्मने नमः मुखे । लं नमः पराय प्रद्युम्नाय विश्वात्मने नमः हृदि । वं नमः पराय अनिरुद्धाय निर्वृत्यात्मने नमः लिङ्गे । लं-नमः पराय नारायणाय सर्वात्मने नमः पादयोः । क्षं-नमः पराय नृसिंहाय कोपतत्त्वात्मने नमः सर्व शरीरे । इति तत्वन्यासः । अथ इन्द्रिय-न्यासः । ॐ दिग्भ्यो नमः श्रोत्रयो । ॐ आदित्याय नमः नेत्रयोः ।

ॐ वायवे नमः त्वचि । ॐ वरुणाय नमः जिह्वायाम् । ॐ अग्नये नमः वाचि । ॐ इन्द्राय नमः हस्तयोः । ॐ विष्णवे नमः पादयो : । ॐ मित्राय नमः पायौ । ॐ प्रजापतये नमः गुह्ये । ॐ चन्द्राय नमः मनसि । ॐ ब्रह्मणे नमः बुद्धौ । ॐ रुद्राय नमः अहङ्कारे । ॐ ईश्वराय नमः मनसि । ॐ चैतन्याय नमः चित्ते । इन्द्रियों के शुद्ध करने के लिये यह इन्द्रियन्यास है ।

॥ अथ पीठन्यास ॥

ॐ आधार शक्तये नमः । ॐ मूल प्रकृत्यै नमः । ओं कूर्म्माय नमः । ॐ अनन्ताय नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ क्षीरसिन्धवे नमः । ॐ श्वेतद्वीपाय नमः । ॐ रत्नोज्वलमहामणिमण्डलाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः । इन नौ मन्त्रों को हृदय में न्यास करे । ॐ धर्माय नमः, दक्षिणांसे । ॐ ज्ञानाय नमः, वामांसे । ॐ वैराग्याय नमः, दक्षिण उरौ । ॐ ऐश्वर्याय नमः, वामोरौ । ॐ अधर्माय नमः, मुखे । ॐ अज्ञानाय नमः, वामपार्श्वे । ॐ अवैराग्याय नमः, कट्याम् । ॐ अनैश्वर्याय नमः, दक्षिणपार्श्वे । ॐ अनन्ताय नमः । ॐ पद्माय नमः । ॐ अं द्वादशकलाव्याप्तसूर्यमण्डलात्मने नमः । ॐ उं षोडशकला व्याप्तचन्द्रमण्डलात्मने नमः । ॐ मं दशकला व्याप्त वन्हि मण्डलात्मने नमः । ॐ सं सत्वाय नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । इन तेरह मन्त्रों को हृदय में न्यास करे । फिर चीने लिखे हुये मन्त्रों को हृदय स्थित अष्ट दल कमल के प्रत्येक दल में एक-एक मन्त्र बोल कर न्यास करें ।

पूर्व से प्रारम्भ करे । ॐ विमलायै नमः । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ ज्ञानायै नमः । ॐ क्रियायै नमः । ॐ योगायै नमः । ॐ प्रह्वै नमः । ॐ सत्यायै नमः । ॐ ईशान्यै नमः । इन आठ शक्तियों को पूर्व में लिखे हुए के अनुसार न्यास कर हृदयस्थ अष्टदलपद्म के मध्य में ॐ अनुग्रहायै नमः यह न्यास करके ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्व भूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगयोगपद्म पीठात्मने नमः इस पीठ मन्त्र का व्यापक रूप से न्यास करे और उस पीठ पर विराजमान नित्यानन्द स्वरूप, सर्व प्रकाश ज्ञान स्वरूप, स्वाभाविक अनन्तगुण-शक्तिसागर, श्रीकृष्ण का ध्यान कर पञ्चोपचार से मानसिक पूजन करे । ॐ अस्य श्रीगोपालाष्टादशाक्षरमन्त्रस्य नारद ऋषिः गायत्री छंदः श्रीकृष्णः परमात्मा देता क्लीं वीजं स्वाहा शक्ति ह्रीं कीलकं श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ नारदऋषये नमः शिरसि । गायत्री छंदसे नमः मुखे । श्रीकृष्णदेवतायै नमः हृदये । क्लीं वीजाय नमः गुह्ये । स्वाहा शक्त्यै नमः पादयोः । ह्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे। इति ऋष्यादिन्यास । क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः । गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः । गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः । वल्लभाय कनिष्ठकाभ्यां नमः । स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां नमः । इति करन्यासाः । क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट् । गोपीजन कवचाय हुम् । वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहा अस्त्राय फट् । इत्यङ्ग न्यासः । क्लीं नमो मूर्ध्नि । कृष्णाय नमः वक्त्रे । गोविन्दाय नमः हृदि । गोपीजन-वल्लभाय नमः नाभौ । स्वाहा नमः पादयोः । इति पदन्यासः । क्लीं नमः मूर्ध्नि । कृं नमः भाले । ष्णां नमः भ्रुवोः । यं नमः नेत्रयोः।

गों नमः कर्णयोः । विं नमः नासिकयोः । दां नमः मुखे । यं नमः कण्ठे । गों नमो दोर्मूले । पीं नमो हृदये । जं नमो उदरे । नं नमो नाभौ । वं नमो लिंगे । ल्लं नमो गुह्ये । भां नमः कट्याम् । यं नमो जान्वोः । स्वां नमो गुल्फयोः । हां नमः पादयोः । इति वर्णन्यासः । ॐ हुं सुदर्शनाय अस्त्राय फट् । इस मन्त्र से अपने चारों तरफ रक्षा करे । मूल मन्त्र को बोलकर तीन बार प्राणायाम करे । फिर श्रीराधाकृष्ण का ध्यान करते हुये यथाशक्ति जप करे । जप करते समय नीचे लिखी बातों को न करे । यथा क्रमदीपिका पृष्ठ ११२ । **न वदन्नस्वपन्गच्छन्नान्यत्किमपि संस्मरन् । नक्षुज्ज्रृम्भणहिक्कादिविकलीकृतमानसः ।** अर्थात् बातें करते हुये, ओंघते हुये, रस्ता चलते हुये और किसी चीज को स्मरण करते हुये, थूकते हुये, जम्हाई लेते हुये, हुचकी लेते हुये, अथवा और किसी तरह से मन को खराब करते हुये जप न करे । एवं पाग बाँधकर, जामा पहर कर, नग्न और शिखा में बिना ग्रन्थि दिये हाथ-पाँव फैलाकर और उँचे आसन पर बैठकर जप न करे । (वैशम्पायन संहिता) में जप करने का नियम यह है--

स्नानं त्रिसवनं प्रोक्तमशक्तौ द्विः सकृत्तथा । अस्नातस्य फलं नास्ति नचातर्पयतः पितृन् । नासत्यमभिभाषेत नेन्द्रियाणि प्रलोभयेत् । शयनं दर्भशय्यायां शुचिः प्रयतमानसः । यद्वासः क्षालयेन्नित्यमन्यथाविघ्नमावहेत् । नैकवासा जपेन्मन्त्रं वहुवस्त्री कदाचन । उपर्यधो वहिर्वस्त्रेपुरश्चरणकृद्भवेत् ।

अर्थात्--तीन बार स्नान करे, यदि असक्त होय तो दो बार या एक बार स्नान करे, क्योंकि बिना स्नान किये और पित्रीश्वरों का बिना तर्पण किये फल नहीं मिलता, झूठ न बोले, इन्द्रियों को चंचल न करे । कुशासन की शय्या पर सोवे, पवित्र रहे । मन का संयम करे । जिस वस्त्र को पहन कर जप करे उसे रोज धोवे अन्यथा विघ्न होगा । एक वस्त्र पहर कर मन्त्र न जपे एवं अनेक वस्त्र पहर कर भी जप न करे । जप करने वाले को धोती, चादर पहर ओढ़ कर जप करना चाहिये एवं (नारद पुराण में) जप करने का नियम इस प्रकार है--

शनैः शनैरविस्पष्टं न द्रुतं न विलम्बितम् । न न्यूनं नाधिकं वापि जपं कुर्याद्दिने दिने । स्त्रीशूद्राभ्यां न सम्भाषेद्रात्रौ जपपरो न च । जपेन्न संध्याकालेषु-प्रदोषेनो भयेषु च । ब्राह्मणानीतवस्त्रशुद्धजलेन कर्मकृद्भवेत् ।

धीरे-धीरे स्वर से जप करे । विशेष जोर से, जल्दी-जल्दी अथवा रुकरुक कर और किसी दिन ज्यादा किसी दिन कम इस तरह जप न करे, स्त्री और शूद्रों से भाषण न करे । रात्रि में संध्या के समय, प्रदोष के समय जप न करे । ब्राह्मण के द्वारा लाये हुये वस्त्र और शुद्ध जल से कर्म करे । रोज गौओं की सेवा करे । सब जीवों पर कृपा करे । और अधिष्ठात्री देवता का ध्यान करे । और खाने-पीने की साम्रग्रियों पर ३२ बार अथवा २५ बार मन्त्र जप कर खाये-

पीवे। और माला, गन्ध, वस्त्र, आभूषण आदि सभी वस्तुओं पर ७ बार जप कर तब उसको व्यवहार में लावे। इस तरह प्रसङ्गवश जप करने का नियम संक्षेप में सब के जानने के लिये यहाँ पर लिख दिया है। विस्तार से देखने वालों को (क्रमदीपिका) मँगाकर पढ़ लेना चाहिए। इस तरह जप शेष कर जप के अन्त में फिर अङ्गन्यास कर, तीन बार प्राणायाम कर नीचे लिखे मन्त्र को बोलकर जप भगवान् को समर्पण करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थितिः।

जप समर्पण कर वहिः पूजा का प्रारम्भ करे। इसकी विधि इस प्रकार है। जगमोहन में जाकर तीन बार साष्टांग प्रणाम कर भगवान् से किम्वा भगवदाज्ञानुवर्ती गुरुदेव से सेवा करने की आज्ञा लेकर मन्दिर का दरवाजा खोलकर तीन बार ताली बजाकर स्वांस के अनुसार मन्दिर में प्रवेश करे। मन्दिर यदि कच्चा हो तो गोबर से लीपकर यदि पक्का हो तो धोकर और वस्त्र से पोंछ कर शुद्ध पवित्र जल से पार्षद धोकर मन्दिर को यथा योग्य सजाकर और पूजा की सामग्रियों को अपने सामने लाकर चौकी पर पार्षदों को सजावे। अपनी बाई तरफ चन्दन से सांथिया बनाकर **भूम्यै नमः** यह बोलकर पृथिवी की प्रार्थना करे। फिर साथिया पर चन्दन पुष्प से पूजा कर कलश को शुद्ध सुगन्धित जल से भरकर उसमें **गंगे च यमुने चैव** इत्यादि मन्त्र पढ़ता हुआ अंकुशमुद्रा से तीर्थों का आवाहन कर चन्दन

पुष्प से **सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः** यह बोलकर पूजन् करे । अपनी दाहिनी ओर चन्दन, पुष्प, वस्त्र-आभूषणादि धरे । पीछे की तरफ हाथ धोने के लिये जल का पात्र रक्खे । बांये हाथ के पास घंटा को धरे । श्रीभगवान् के दाहिनी तरफ घृत का प्रदीप और बांई तरफ तेल का प्रदीप धरे । अपनी दाहिनी तरफ चन्दन से त्रिकोण अथवा षट् कोण बनाकर चन्दन और पुष्प से पूजाकर **त्रिपादकायै नमः** इस मन्त्र से त्रिपादिका को उस पर धरे । उसके ऊपर **अस्त्राय फट्** इस मन्त्र से शंख को धोकर **ॐ अर्घ्यपात्राय नमः** यह बोलकर अर्घ को धरे । **हृदयाय नमः** यह बोलकर गन्ध पुष्पादि देकर ।

ॐ क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अंः अं औं ओं ऐं एं ॣं ॢं ॄं ॠं ऊं उं ईं इं अं क्षं ।

पढ़कर तथा मूलमन्त्र पढ़कर पवित्र जल से शंख को भरे फिर

ॐ मं धर्मप्रददशकलात्मने वन्हिमण्डलाय नमः

इससे त्रिपादिका की पूजा करे

ॐ अं अर्थप्रदद्वादश कलात्मने सूर्य्य मण्डलाय नमः

इससे शंख की पूजा करे । फिर

ॐ उं कामप्रदषोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः

इससे शंख में भरे हुये जल की पूजा करे । **वौषट्** इस मन्त्र से उस जल को देखकर **गंगे च यमुने चैव** इस मन्त्र से अंकुश मुद्रा से सूर्य मण्डलस्थ तीर्थों का आवाहन कर **वषट्** इस मन्त्र से गालनी मुद्रा और धेनु मुद्रा दिखाकर **हुम्** इस कवच मन्त्र से दोनों हाथों से ढक कर अपने हृदय से भगवान् का आवाहन कर अङ्गन्यास कर उस जल में गंध पुष्प से भगवान् की पूजा कर शंख के चारों तरफ **अस्त्राय फट्** इस मन्त्र को पढ़ कर शंख की रक्षा करे । फिर भगवत्स्वरूप उस जल को मत्स्यमुद्रा से ढक कर तुलसीदल किम्वा पुष्प से उसका स्पर्श करता हुआ ८ बार मूलमन्त्र को जपे । फिर शंख से दाहिनी तरफ रखे हुए प्रोक्षणीय पात्र में उस शंख के जल को लेकर उससे थोड़ा सा कलश में देकर और जितनी पूजा की सामग्री हो, सब पर थोड़ा-थोड़ा छिड़क दे । और अपने ऊपर मूलमन्त्र को बोलकर तीन बार छिड़क और शंख का ध्यान करे--

व्यासात्मजः कुमुदकुन्दमृणाल गौरः । शंखो हरेः करतला-म्बुजराजहंसः । नादेन यस्य सुरशत्रुविला-सिनीनां नीव्यो भवन्ति शिथिला जघनस्थलीषु ।

इस तरह शंख की पूजा कर

ॐ गजध्वनिर्मन्त्रमातः स्वाहा ।

इस मन्त्र को बोलकर चन्दन पुष्प से घण्टा की पूजा करे । फिर समस्त पार्षदों की पूजा करे । शंख के दाहिनी तरफ रक्खे हुए

पाद्य पात्र में श्यामाक, दुर्वा अब्ज, विष्णुक्रान्ता छोड़कर तुलसी चन्दन तथा कलश के जल से भर कर गंध-पुष्प से पूजन कर एक बार मूलमन्त्र जपकर थोड़ा सा शंख का जल देकर धेनुमुद्रा दिखावे। इसी तरह शंख के उत्तर तरफ अर्घ्य पात्र में गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, कुशाग्र, तिल (सर्षप) सरसों, दूर्वा छोड़े और पहिले की तरह पूजा करे। शंख के पूर्व तरफ रक्खे हुए आचमन पात्र में (जातीफल) जायफल, लवंग, कंकोल, पिप्पली छोड़े और पूजा करे । शंख के पश्चिम तरफ रक्खे हुए मधुपर्क पात्र में दधि, मधु, घृत रक्खे और ऊपर की तरह पूजा करे। इस तरह सब पात्रों की पूजा हो जाने पर पृथ्वी पर अष्ट दल पद्म लिखकर उस पर योग पीठ बनाकर योग पीठ के देवताओं का आवाहन और पूजन करे, उसकी विधि यह है। योग पीठ पर--

ॐ मंडूक ! इहागच्छ इह तिष्ठ मंडूकाय नमः ।

इस मन्त्र से मंडूक का आवाहन और पूजन कर इसी तरह प्रत्येक मन्त्र को बोलता हुआ पूजा करता जाय । ॐ कालाग्ने ! इहागच्छ इहतिष्ठ कालाग्नेनमः । ॐ मूल प्रकृते ! इहागच्छ इह तिष्ठ मूल प्रकृत्यै नमः । ॐ आधार शक्ते ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण आधार शक्तये नमः । ॐ भो कूर्म ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कूर्माय नमः । ॐ भो अनन्त ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अनन्ताय नमः। ॐ भो वराह ! इहा-गच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वराहाय नमः। ओं भोपृथ्वि !

इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ओं पृथिव्यै नमः । ॐ भो अमृतार्णव ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहांण ओं अमृतार्णवाय नमः । ओं भोरत्नद्वीप ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ओं रत्नद्वीपाय नमः । ओं भो स्वर्ण पर्वत ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण । ओं स्वर्ण पर्वताय नमः । ओं भो कल्पोद्यान ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कल्पोद्यानाय नमः । ओं नानारत्नमयभूमिके ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ओं नानारत्नमयभूमिकायै नमः । ओं भो मणिमण्डप ।इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ओं मणिमण्डपाय नमः । ओं भो कल्पवृक्ष ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ओं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ भोरत्नवेदिके ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण । ॐ भो रत्नवेदिकायै नमः । ॐ भो रत्न सिंहासन ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रत्नसिंहासनाय नमः ? ॐ भो योगपीठ ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ योग पीठाय नमः । इन मन्त्रों से योग पीठ के देवताओं का आवाहन और पूजन कर, आचमन कर, प्राणायाम कर, संकल्प करे । अद्य सर्व गुण विशिष्टायां पूर्वोक्तायां शुभ पुण्यतिथौ श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं श्रीभगवत्पूजन-कर्माङ्गत्वेन षोडशाङ्गन्यासानहं करिष्ये । यह संकल्प बोल

ॐ सहस्रशीर्षेति षोडशपुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुष ॠषिः जगद्बीजं पुरुषो देवता आद्यानां पञ्च दशानामनुष्टुप्छन्दः अन्त्या-यास्त्रिष्टुप्छंदोन्यासे विनियोगः । १ ॐ सहस्रशीर्षाऽ पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र-पात् । सभूमिर्ठः सर्वतस्पृत्त्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥

यह वाम कर में न्यास करे ।

२ ओं पुरुष एवेदं ँ सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम्। उता-मृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।

यह पढ़कर दाहिने हाथ में न्यास करे ।

३ ॐ एतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्चपुरुषः । पादोस्यव्वि-श्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि ।

इस मन्त्र को बाँये पैर में न्यास करे ।

४ ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभव-त्पुनः। ततो विष्ष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ।

इस मन्त्र को दाहिने पैर में न्यास करे ।

५ ॐ ततो व्विराडजायतव्विराजोऽधि पूरुषः स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ।

इस मन्त्र को बांई जानु में न्यास करे ।

६ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूंस्तां-श्चक्रेव्वायव्व्या नारण्याग्ग्राम्याश्श्चये ।

इस मन्त्र का दाहिनी जानु में न्यास करे ।

७ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा ँ सि जज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।

इस मन्त्र का वाम कटि में न्यास करे ।

८ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः । गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावय ÷ ।।

इस मन्त्र का दाहिनी कटि में न्यास करे ।

९ ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्नपुरुषञ्जातमग्ग्रतः । तेन देवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्चये ।

इस मन्त्र का नाभि में न्यास करे ।

१० ॐ यत्पुरुषंव्व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् मुखङ्कि-मस्याऽऽसीत् किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्च्येते।

इस मन्त्र को हृदय में न्यास करे ।

११ ॐ ब्ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्वाहू राजन्य÷कृत। ऊरूतदस्य यद्वैश्य÷पद्भ्यार्ठ. शूद्रोऽअजायत ।

इस मन्त्र को वाम कुक्षि में न्यास करे ।

१२ ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो-ऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखादग्निरजायत ।

इस मन्त्र को दाहिनी कुक्षि में न्यास करे ।

१३ ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षर्ठ.शीर्ष्णोद्यौ. समवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ऽअ-कल्पयन् ।

इस मन्त्र को कण्ठ में न्यास करे ।

१४ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । व्वसन्तो स्यासीदाज्यङ् ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ।

इस मन्त्र को मुख में न्यास करे ।

१५ ॐ सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽवद्ध्नन् पुरुषम्पशुम् ।

इस मन्त्र को आँखों में न्यास करे ।

१६ ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् तेहना कम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्तिदेवाः ।

इस मन्त्र को मस्तक में न्यास करे । इस तरह षोडशांग न्यास कर मूल मन्त्र से पञ्चाङ्ग न्यास कर, जैसे शरीर में न्यास किये हैं उसी तरह भगवान् के शरीर में भी भावना पूर्वक न्यास करे । इसके बाद भगवान् का षोडशोपचार से पूजन का प्रारम्भ करे ।

हाथ में पुष्प लेकर

ध्येयः सदा सवितृमंडलमध्यवर्त्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः । केयूरवान् कनककुण्डलवान् किरीट हारी हिरण्यमय-वपुर्धृतशंखचक्रः ।

इस मन्त्र से श्रीसर्वेश्वरजी का ध्यान कर पुष्प को अपने सिर पर रक्खे । फिर **सहस्रशीर्षा** तथा

आगच्छ लक्ष्म्या सह यादवेन्द्र ! गोविन्द हृत्पीठमिहाधि-तिष्ठ । गृहाण वर्य्यां विधिना सपर्य्यां श्रीकृष्ण कुर्य्यां विविधो-पचारैः ॥

तथा मूल मन्त्र बोलकर ।

हे भगवन्निहागच्छेह तिष्ठेह सन्निधापय मम पूजां गृहाण ॐ स्थां स्थीं स्थिरो भव ।

यह बोलकर आवाहन करे । फिर पुरुष एव २ तथा

सुवर्ण नानाविधवर्णरत्नरोचिच्छटाक्षिप्त-महान्धकारम् । विस्तीर्णमेतद्धि मया वितीर्णं श्रीकृष्ण सिंहासनमास्यतां च ।

तथा मूल मन्त्र को बोलकर भगवन्निदं ते आसनम् यह बोलकर पुष्पादिक से आसन समर्पण करे । फिर पाद्य पात्र लेकर बायें हाथ से घन्टा बजाते हुए ॐ एतावानस्य ३ तथा

गंगाजलं समानीतं शुद्धं निर्म्मलमेव च । पाद्यं गृहाण देवेश ! राधिका सहितो हरे ॥

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्नेतत्ते पाद्यं समर्पयामि

यह बोल कर भगवान् के दोनों चरणों में पाद्य समर्पण करे । फिर हाथ धोकर हाथ में अर्घ्य पात्र लेकर--

ॐ त्रिपादूर्द्ध्व ४ तथा

गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् । गंध पुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं तत्प्रतिगृह्यताम् ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर **भगवन्नेष तेऽर्घ्यः स्वाहा** यह बोलकर भगवान् को अर्घ्य समर्पण करे । फिर हाथ शुद्ध कर आचमन पात्र को लेकर--

ॐ ततो विराडजायत ५ तथा

रत्नोज्वलायां कनकालुकायां निवेदितं तेखिल-तीर्थपाद । हस्तार्घदानादनुपादपद्मप्रक्षालनादाचमनं विधेहि ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्नेतत्ते आचमनीयं सुधारूपं समर्पयामि ।

यह बोलकर भग्वान् के मुख में आचमनीय दे । फिर हाथ शुद्ध कर मधुपर्क पात्र लेकर ६

ॐ मधुव्वाताऽऋृतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्धीर्न्नः-सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पा-र्थिव ँ रजः । मधुद्द्यौ-रस्तु नः पिता । मधुमान्नो-व्वनस्पतिर्म्मधु मां२अस्तु सूर्यः÷माद्धी-र्गावो भवन्तु नः- । तथा सुस्वादं मधुरं हृद्यं श्रद्धयोपाहृतं मया । मधुपर्कं गृहाणेश वलपुष्टिविवर्द्धनम् ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर **भगवन्नेषते मधुपर्कः स्वधा** यह बोलकर भगवान् को मधुपर्क समर्पण करे । फिर हाथ शुद्ध कर आचमन पात्र लेकर

ॐ ततो विराडजायत तथा गङ्गादि सर्वतीर्थे-भ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् । तोयमेतत्सुखस्पर्शं गृहाणा-चमनीयकम् ।

तथा मूल मन्त्र बोल कर भगवान् को आचमन करावे । फिर

प्रोत्फुल्लमल्लीसुमनोहरेण सुवासितस्नेहवरेण विष्णो । वैदुर्य्यपर्यंकतलेकराभ्यामभ्यङ्गमंगे वयमाच-रामः।

यह बोलकर सुगन्धित तेल भगवान् के अङ्ग में लगावे । फिर पञ्चामृत द्वारा अलग-अलग मन्त्रों से बोल कर स्नान करावे ।

पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।

इस मन्त्र को बोल कर भगवान् को दूध से स्नान करावे ।

दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रणआयूंठ. सितारिषत् ।

इस मन्त्र को बोलकर दधि से स्नान करावे ।

घृतङ्घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसा पावानः पिबतान्तरि-क्षस्यहविरसि स्वाहा दिशःप्प्रदिशः ऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।

इसको बोलकर घृत से स्नान करावे ।

अपाऽ्ठ. रसमुद्वयसऽ्ठ. सूर्ये सन्तऽ्ठ. समाहितम् । अपाऽ्ठ. रसस्य यो रसस्तव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयाम गृहीतोसींन्द्रायत्वाजुष्टङ् गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्रा-यत्वाजुष्टतमम् ।

इसको बोलकर शर्करा से स्नान करावे ।

मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ।

इसको बोलकर मधु से स्नान करावे ।

पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः । सरस्वती तुपञ्चधा सादेशे भवत् सरित् ।

इसे बोलकर पञ्चामृत से स्नान करावे । तदनन्तर

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम् तथा त्वां दक्षिणावर्त-विलक्षशंखकुक्षिस्थितेनाम्बर जन्हुजायाः । जलेन जाग्रत्तुलसीदलेन श्रीकृष्णदेवं स्नपयामि भूयः ।

तथा मूल मन्त्र को बोलकर घण्टा बजाते हुए शंखोदक से शुद्ध स्नान करावे । फिर

अघौघविध्वंसकरं नराणां धर्मद्रवं देवनदीभवं च। पानीयमानीय निवेदितं ते तवाभिषेकाचमनीयमस्तु ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर आचमन करावे । फिर

संशोषितं शेखरचारिवारिणासुखानुकूलेन दुकूलकेन । तथा तवाङ्गानि रथांगपाणे संमार्जयामः पटुना पटेन ।

तथा मूल मन्त्र बोल कर भगवान् के अङ्गों को कोमल वस्त्र से धीरे-धीरे पोंछे । फिर

ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋच तथा वस्त्रं पीताम्बरं नाथ ह्यतिसूक्ष्मं सुशोभनम् । शुभांशुकं मयादत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ।

तथा मूल मन्त्र बोल कर

भगवन्निदं ते वस्त्रं परिकल्पयामि ।

बोल कर वस्त्र पहिनावे । फिर पूर्व के अनुसार

स्वर्गापगाम्भो भव रत्नराशि भृंगार भृंगारक एष मुख्यः । श्रीवासवासः परिधाय पूर्वं देव द्विरेवाचमनं कुरुष्व ।

यह मन्त्र बोलकर आचमन करावे । फिर

ॐ तस्मादश्वा तथा मुक्तामये सूत्र विनिर्मिते ते द्वेतार-चामीकरकल्पिते च । यज्ञोपवीते तु मयोपनीते प्रीतेन भक्त्या परिधीयताम् तत् ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्निदं ते यज्ञोपवीतं समर्पयामि

यह बोल कर भगवान् को यज्ञोपवीत समर्पण करे । फिर

मौलौ किरीटं किल कर्णदेशे निवेशये केशव कुण्डले च । सकौस्तुभं ते हृदये च हारं हरे करे कङ्कणकं करोमि । मञ्जीरकं मंजुलमङ्घ्रियुग्मे काञ्चीं नितम्बेऽप्यवलम्बयामि । सरत्नरोचि-ष्कमनामिकासु क्षुद्रासु मुद्रायुगलं दधाति ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्निमानि ते भूषणानि समर्पयामि

यह बोलकर भगवान् को आभूषण समर्पण करे । फिर

तं यज्ञम्, तथा **स्नेहेन देहे तव चारुचन्द्रकस्तूरिकाकुंकुम-संकुलेन । पाटीरपङ्केन तु निष्कलङ्के भालस्थले लेपनमाचरामि।**

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्निदं ते चन्दनम् समर्पयामि

यह बोलकर भगवान् को चन्दन लगावे । फिर

तुलस्यमृतनामासि सदा त्वं केशवप्रिये । केश-वार्थं विचिन्वामि वरदा भव शोभने । त्वदङ्गसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिम् । तथा कुरु परित्रांगि कलौ मल विनासिनि ।

यह मन्त्र बोलकर तुलसी को प्रणामपूर्वक धीरे-धीरे जिससे वृक्ष न हिले और शाखा न टूटे । इस तरह उतार कर शुद्ध जल से स्नान कराकर और उसका जल सुखा कर चन्दन से मिश्रित कर-

ॐ नमस्ते बहु रूपाय विष्णवे परमात्मने स्वाहा।

तथा मूल मन्त्र बोलकर भगवान् के चरणारविन्दों में तुलसी दल समर्पण करे, प्रत्येक दल अर्पण करने के बाद-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ।

बोलकर नमस्कार कर हाथ धोकर फिर दूसरा दल समर्पण करे । यदि शक्ति हो तो प्रत्येक दल समर्पण करके कुछ भोग देवे । फिर-

ॐ यत्पुरुषं व्यदधु तथा माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै विभो । मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाणै-तानि केशव ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर

भगवन्निमानि पुष्पाणि समर्पयामि ।

यह बोलकर भगवान् को पुष्पमाला तथा पुष्प समर्पण करे। फिर चन्दन तुलसी और पुष्पों से नीचे लिखे हुये आठ नामों से श्रीकृष्ण का पूजन करे--ॐ श्रीकृष्णाय नमः इदं सचन्दनं तुलसीदलं पुष्पञ्च समर्पयामि १-ॐ श्रीवासुदेवाय नमः इदं सचन्दनं० २-ॐ श्रीदेवकी नन्दनाय नमः इदं सचन्दनं० ३-श्रीनारायणाय नमः इदं सचन्दनं० ४-ॐ श्रीयदुश्रेष्ठाय नमः इदं सचन्दनं० ५-ॐ श्रीवार्ष्णेयाय नमः इदं सचन्दनं० ६-ॐ श्रीधर्मसंस्थापनाय नमः इदं सचन्दनं० ७-ॐ श्रीअसुरान्तकभारहारिणे नमः इदं सचन्दनं तुलसी-दलं पुष्पं च समर्पयामि ॥८॥ फिर श्रीकृष्ण के मुख पर ॐ वें वेणवे नमः वंशी की पूजा करे। गले में ॐ वं बनमालायै नमः बनमाला की पूजा करे। हृदय में ॐ श्रीं श्रीवत्साय नमः श्री वत्स की पूजा करे। कण्ठ में ॐ कौं कौस्तुभाय नमः कौस्तुभ मणि की पूजा करे। शिर में सूर्य्याऽयुत समाभास किरीटाय नमः किरीट की पूजा करे।

इस तरह भगवान् की पूजा करने के बाद श्री गोपालयन्त्र को बनाकर उसके समस्त देवताओं का आवाहन कर पूजन करे। प्रथमावरणस्थ षट्कोण में षडङ्गदेवताओं का आवाहन कर पूजन करे। यथा पूर्व से प्रारम्भ कर हे हृदय इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ हृं हृदयाय नमः। ॐ भो शिरः इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शिरसे स्वाहा। भो शिखे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शिखायै वषट्। भो कवच इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कवचायहुँ। भो नेत्रत्रय इहागच्छ इह तिष्ठ मम

पूजां गृहाण ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । भो अस्त्र इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अस्त्राय फट् । इसके बाद प्रथमवृत्त में पूर्व से प्रारम्भ कर भो ललिते ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ लं ललितायै नमः । अग्नि कोण में भो विशाखे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ विं विशाखायै नमः । दक्षिण में भो चम्पकलते इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐचं चम्पकलतायै नमः । नैऋत्य में भो चित्रे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ चिंचित्रायै नमः । पश्चिम में भो तुंगविद्ये ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ तुं तुंगविद्यायै नमः । वायव्य कोण में भो इन्दुलेखे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ इं इन्दुलेखायै नमः ।उत्तर में भो रंगदेवि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रं रंगदेव्यै नमः । ईशान कोण में भो सुदेवि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सुं सुदेव्यै नमः । फिर अग्नि कोण से प्रारम्भ कर चारों कोणों में यथा क्रम से भो वेणो इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वें वेणवे नमः । भो वनमाले इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वं वनमालायै नमः । भो श्रीवत्स इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ श्रीवत्साय नमः । भो कौस्तुभ इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कौं कौस्तुभाय नमः । फिर पूर्व से प्रारम्भ कर चारों दिशाओं में भो दामन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ दां दाम्ने नमः । भो सुदामन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सुं सुदाम्ने नमः । भो श्रीदामन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ श्रीं श्री दाम्ने नमः । भो वसुदामन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वं वसुदाम्ने नमः । फिर पूर्व से प्रारम्भ कर चारों दिशाओं में यथा क्रम से भो पारिजात इहागच्छ

इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पां पारिजाताय नमः । भो संतान इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सं सन्तानाय नमः । भो कल्पवृक्ष इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । भो चन्दनं इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ चं चन्दनाय नमः । कर्णिका में भो मन्दार इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मं मन्दाराय नमः । द्वितीयावरण में पत्र के मूल से प्रारम्भ करे और पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर आठ दिशाओं में यथा क्रम से आवाहन और पूजन करे । पूर्व में भो वासुदेव इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वां वासुदेवाय नमः । पश्चिम में भो संकर्षण इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण सं संकर्षणाय नमः । दक्षिण में भो प्रद्युम्न इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण प्रं प्रद्युम्नाय नमः । उत्तर में भो अनिरुद्ध इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण अं अनिरुद्धाय नमः । अग्निकोण में भो शान्ते इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण शां शान्त्यै नमः । नैऋत्यकोण में भो सरस्वति इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण सं सरस्वत्यै नमः । वायव्य कोण में भो श्रि ! इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण श्रीं श्रियै नमः । ईशान कोण में भो रते ! इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण रं रत्यै नमः । उसके बाद तृतीयावरण में पूर्व से प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो रुक्मिणि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रुं रुक्मिण्यै नमः । भो सत्यभामे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सं सत्यभामायै नमः । भो जाम्बवति इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ जां जाम्बवत्यै नमः । भो नाग्निजिति इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नां नाग्निजित्यै नमः । भो मित्रविन्दे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मिं

मित्रविन्दायै नमः । भो कालिन्दि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कां कालिन्द्यै नमः । भो लक्ष्मणे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ लं लक्ष्मणायै नमः । भो सुशीले इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सुं सुशीलायै नमः । इसके बाद चतुर्थावरण में पूर्व से प्रारम्भ कर आठ दिशाओं में यथा क्रम से भो वसुदेव इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पीतवर्णाय वं वसुदेवाय नमः । भो देवकि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ श्याम वर्णायै दें देवक्यै नमः । भो नन्द इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कर्पूर गौरवर्णाय नं नन्दाय नमः । भो यशोदे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कुंकुमाभायै यं यशोदायै नमः । भो बलदेव इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ धवलवर्णाय बं बलदेवाय नमः । भो सुभद्रे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कलापश्यामलायै सुं सुभद्रायै नमः । भो गोपा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु मम पूजां गृह्णन्तु ॐ गों गोपेभ्यो नमः । भो गोप्य इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु मम पूजां गृह्णन्तु ॐ गों गोपीभ्यो नमः । इसके बाद पञ्चमावरण में पूर्व से प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो अर्जुन इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अर्जुनाय नमः । भो निशठ इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ निं निशठाय नमः । भो उद्धव इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ उं उद्धवाय नमः । भो दारुक इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ दां दारुकाय नमः । भो विष्वक्सेन इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ विं विष्वक्सेनाय नमः । भो सात्यकिन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सां सात्यकिने नमः । भो गरुड़ इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ गं गरुड़ाय नमः । भो

नारद इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नां नारदाय नमः । इसके बाद षष्ठावरण में पूर्व से प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो इन्द्रनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ इं इन्द्रनिधये नमः । भो नीलनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नीं नीलनिधये नमः । भो कुन्दनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कुं कुन्दनिधये नमः । भो मकरनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मं मकरनिधये नमः । भो आनन्दनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ आं आनन्दनिधये नमः । भो कच्छपनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कं कच्छपनिधये नमः । भो शंखनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शं शंखनिधये नमः । भो पद्मनिधे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पं पद्मनिधये नमः । इसके बाद सप्तमावरण में पूर्व से प्रारम्भ कर यथा क्रम से भो विमले इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ विं विमलायै नमः । भो उत्कर्षिणि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ उं उत्कर्षिण्यै नमः । भो ज्ञाने इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः। भो क्रिये इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ क्रीं क्रियायै नमः । भो योगे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ यों योगायै नमः। भो प्रह्वि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ प्रं प्रह्वै नमः। भो सत्ये इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सं सत्यायै नमः। भो ईशाने इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ईं ईशानायै नमः। कर्णिका में भो अनुग्रहे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण अं अनुग्रहायै नमः। इसके बाद पत्रों के बीच में चारों दिशाओं में पूर्व से प्रारम्भ करके भो आत्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण

ॐ आं आत्मने नमः । भो अन्तरात्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अं अन्तरात्मने नमः । भो परमात्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पं परमात्मने नमः । भो ज्ञानात्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः । इसके बाद वृत्त के बाहर चारों तरफ भी पंचाशत् वर्णमातृका इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु मम पूजां गृह्णन्तु ॐ पं पञ्चाशद्वर्णमातृकाभ्यो नमः । उसके ऊपर पूर्व में भो सत्वगुण इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ सं सत्वाय नमः । भो रजोगुण इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रं रंजसे नमः । भो तमः इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ तं तमसे नमः । पूर्व और ईशानकोण के मध्य में भो गुरो इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ गुं गुरवे नमः । भो परतमगुरव इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु मम पूजां गृह्णन्तु ॐ पं परतमगुरुभ्यो नमः । इसके बाद पूर्व से प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो धर्म इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ धं धर्माय नमः । भो ज्ञान इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । भो वैराग्य इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वैं वैराग्याय नमः । भो ऐश्वर्य इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः । भो अधर्म इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अं अधर्माय नमः । भो अज्ञान इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अं अज्ञानाय नमः । भो अवैराग्य इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अं अवैराग्याय नमः । भो अनैश्वर्य इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । इसके बाद पूर्व से प्रारम्भ कर आठ दिशाओं में यथा क्रम से भो इन्द्र इहागच्छ इह

तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पीत वर्णाय इन्द्राय नमः। भो अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रक्तवर्णाय अं अग्नये नमः । भो यम इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ श्यामवर्णाय यं यमाय नमः। भो निऋते इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ कृष्णवर्णाय निं निऋतये नमः । भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शुक्लवर्णाय वं वरुणाय नमः । भो वायो इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ धूम्रवर्णाय वायवे नमः। भो कुबेर इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नीलवर्णाय कुं कुवेराय नमः । भो ईशान इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शुक्लवर्णाय ईं ईशानाय नमः । पूर्व और ईशान के बीच में भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ गोरोचन वर्णाय ब्रं ब्रह्मणे नमः । पश्चिम और नैत्रऋत्य कोण के बीच में भो शेष इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शुक्लवर्णाय शें शेषाय नमः । उनके ऊपर पूर्व से प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो वज्र इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पीतवर्णाय वं वज्राय नमः । भो शक्ते इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ रौप्यवर्णाय शं शक्त्यै नमः । भो दण्ड इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नील वर्णाय दं दण्डाय नम. । भो खड्ग इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ श्वेतवर्णाय खं खड्गाय नमः । भो पाश इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ विद्युतवर्णाय पां पाशाय नमः। भो अंकुश इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नीलवर्णाय अं अंकुशाय नमः । भो गदे इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ शुक्लवर्णायै गङ्गादायै नमः । भो त्रिशूल इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नीलवर्णाय त्रिं त्रिशूलाय नमः। पूर्व और ईशान

कोण के बीच में भो पद्म इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ पं पद्माय नमः। पश्चिम और नैत्रऋत्य कोण के बीच में भो चक्र इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ चं चक्राय नमः। इसके बाद पूर्व दिशा में प्रारम्भ कर ८ दिशाओं में यथा क्रम से भो ऐरावता इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ ऐं ऐरावताय नमः। भो मेष (छागल) इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ में मेषाय नमः (छां छागलाय नमः)। भो महिष इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मं महिषाय नमः। भो प्रेत इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ प्रें प्रेताय नमः। भो मस्थ इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मं मत्स्याय नमः। भो मृग इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ मृं मृगाय नमः। भो नर वाहन इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ नं नरवाहनाय नमः। भो वृष इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ वृं वृषाय नमः। पूर्व और ईशान कोण के बीच में भो हंस इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण ॐ हं हंसाय नमः।

इस तरह यन्त्र की पूजा करके-

ब्राह्मणोऽस्य तथा वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् तथा भगवन्नेषते धूपः।

यह बोलकर भगवान् को धूप देवे। फिर

चन्द्रमा मनसो जात तथा स्नेहानुयायी मलिना प्रसङ्गी निवार्यते वा न समीरणेन। प्रदीयते रत्नमयः

प्रदीपः श्रीकृष्ण ते वृष्णिकुलप्रदीप ।

तथा मूल मन्त्र बोलकर **भगवन्नेषते दीपः** यह बोलकर प्रदीप अर्पण करे । फिर नैवेद्य लाकर मूल मन्त्र से प्रोक्षण करके गन्ध पुष्प से पूजन करके **यं** इस वायु बीज को ८ बार जप कर नैवेद्य के दोषों को सुखाकर **रं** इस अग्नि बीज को ८ बार जप कर नैवेद्य के दोषों को जलाकर **वं** इस अमृत बीज को ८ बार जप कर नैवेद्य को अमृतमय चिन्तवन करके धेनु मुद्रा और महा मुद्रा को दिखाकर चक्रमुद्रा से **अस्त्राय फट्** बोलकर नैवेद्य की रक्षा करके मूल मन्त्र को ८ बार जपे फिर **ॐ अमृतोपस्तरण मसिस्वाहा** इस मन्त्र से भगवान् के हाथों को धुलाकर मूल मन्त्र तथा **नाभ्याऽऽसीद्** तथा

चतुर्विधान्नं सघृतं सुवर्णपात्रे मया देव समर्पितं ते । संवीज़्यमानो रमया रमेश जुषस्व देवान् रमयन् विनोदैः । तथा सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीकृष्णायनमः ।

बोलकर शंख का जल कुछ देकर नैवेद्यपात्र को स्पर्श कर धेनुमुद्रा दिखावे ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

इन पञ्च प्राणाहुतियों का चिन्तवन कर भोजन करते हुए भगवान् का चिन्तवन करता हुआ गोपाल मन्त्र का एक माला जप करे । फिर -

नीहारहारं घनसारसारं प्रकल्पितानेकसुगन्धि भारम् । शीताम्बुजाम्बूनदपात्रवर्त्ति प्रीतेन पीताम्बर पीयताम् तत् तथा **ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा ।**

इस मन्त्र से भगवान् के पीने को जल देवे । फिर

त्वं प्रत्यपोशानमिदं गृहाण मयार्पितं पाणियुगं विमृद्य । शलाकया दन्तविलं विशोध्य विष्णो विशुद्धा-चमनं विधेहि ।

यह मन्त्र बोलकर भगवान् को आचमन कर नैवेद्य को विष्वक्सेन गरुडादि पार्षदों को समर्पण करे । तथा पूजा पूर्ति के लिये-

कर्पूरकस्तूरिकयानुबिद्धं सत्पूगसत्खादिरसार-सिद्धम् । सम्पूर्णमुक्ताफलचूर्णयुक्तं ताम्बूलवल्लीदलमस्तु भुक्तम् ।

यह बोलकर पान की बीड़ी समर्पण करे । फिर

गंगातरंगावलिनिर्मलाभ्यां विशालवालद्युति सुन्दराभ्याम् । निवद्धचामीकरचामराभ्यां संवीज्यसे संप्रति दम्पतिभ्याम् ।

इसको पढ़कर चमर अर्पण करे । फिर

संसक्त मुक्ताफलशोभितान्तं शिरः स्फुरत्कांच-नकुम्भकान्तम् । सरत्नकार्तस्वरदण्डकाण्डं दधामि ते पाण्डुरमातपत्रम् ।

इसको बोलकर छत्र अर्पण करे । फिर

आदर्श एवासि जगत्त्र्ययस्य तथा तवादर्श इदं जगच्च । ज्ञात्वापि सेवा समयोचितत्वादादर्श आदर्श्यत एव देव ।

इस मन्त्र को बोलकर भगवान् को दर्पण दिखावे । फिर आरती करे उसका नियम इस प्रकार है ।

आदौ चतुष्पादतले च कृत्वा द्विर्नाभिदेशे मुख-मण्डलेकम् । सर्वाङ्ग देशेपि च सप्तवारं तथांर्त्तिकं भक्त-जनैस्तु देयम् ।

अर्थात् चरणारविन्दों में चार बार नाभि देश में दो बार और मुख मण्डल पर एक बार तथा सर्वाङ्ग में सात बार इस तरह आरती को घुमाना चाहिये । और आरती करते समय मूल मन्त्र का जप करते जाना चाहिये । फिर **शान्ति कान्ति गुण मंदिरं हरिम्** इत्यादि निम्बार्काचार्य से परवर्ती पूर्वाचार्य विरचित सविशेष-निर्विशेष श्रीकृष्णस्तव का पाठ कर स्तुति करे । फिर **यत्पुरुषेण** यह वैदिक मन्त्र तथा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ।

यह बोलता हुआ चार बार प्रदक्षिणा करे । फिर

सप्तास्यासन् तथा नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो-ब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।

बोलकर श्रीभगवान् को साष्टाङ्ग प्रणाम करे । फिर मूल मन्त्र पढ़कर भगवान् के चरणारविन्दों में पुष्पांजलि समर्पण करे । फिर हाथ से जल लेकर

इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्व-प्नसुषुप्ति-अवस्थासु च कायेन, वाचा, मनसा च यत्कृतं यदुक्तं यत्स्मृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । तदीयं च सकलं हरये सम्यगर्पये ।

अपने को श्रीभगवान् के चरणारविन्दों में अर्पण करे । फिर भगवच्चरणोदक को **श्रीकृष्णपाद तीर्थाय नमः** यह बोल कर गन्ध पुष्प से पूजन कर चरणोदक के पात्र को माथे पर रख कर किसी आसन पर रक्खे, खाली जमीन पर न धरे । फिर

बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलो नारदोऽर्जुनः । प्रह्लादश्चाम्वरीषश्च वसुर्वायुसुतः शिवः । विष्व-क्सेनोद्धवोऽक्रूरः सनकाद्याः शुकादयः । आयान्तु वैष्णवाः सर्वे दीनोद्धरण तत्पराः ।

वैष्णवों का आवाहन कर उनको चाणामृत देकर फिर आप भी चरणामृत लेवे ।

इस तरह भगवान् की पूजा से निवृत्त होकर पवित्र आसन पर भगवान् के सन्मुख बैठकर श्री (गोपाल कवच) का पाठ करे तथाहि--पुलस्त्य उवाच । भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितं त्रैलोक्यमंगलं नाम कृपया कथय प्रभो ॥१॥ श्रीसनत्कुमार उवाच। शृणु वक्ष्यामि विपेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् । नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥२॥ ब्रह्मणा कथितं मह्यं परंस्नेहाद् वदामि ते । अति गुह्यतमं तत्त्वं ब्रह्म मंत्रौघविग्रहम् ॥३॥ यद्धृत्वा पठनाद् ब्रह्म सृष्टिं वितनुते ध्रुवम् । यद्धृत्वा पठनात्पाति महालक्ष्मी जगत्त्रयम् ॥४॥ पठनाद्धारणच्छंभुः संहर्ता सर्वतत्त्ववित् । त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादि महासुरान् ॥५॥ वरद्दप्तान् जघानैव पठनांद्धारणाद्यतः । एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥६॥शिष्याय विष्णुभक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् । शठाय परशिष्याय दत्वा मृत्युमवाप्नु-यात् ॥७॥ त्रैलोक्य मंगलस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः । ऋषिश्छंद-स्तु--गायत्रीदेवो नारायणः स्वयम् ॥८॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनि-योगः प्रकीर्तितः । प्रणवो मे शिरः पातु नमो नारायणाय च ॥६॥ भालं पायान्नेत्रयुग्ममष्टार्णो भुक्तिमुक्तिदः । क्लीं पायाच्छ्रोत्रयुग्मं चैकाक्षरः सर्वमोहनः ॥१०॥ क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणं गोविन्दायेति जिह्वकाम् । गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहाननं मम ॥११॥ अष्टा-दशाक्षरो मन्त्रः कण्ठं पातु दशाक्षरः । गोपीजन पदं वल्लभाय स्वाहा भुजद्वयम् ॥१२॥ क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः स्कन्धौ

दशाक्षरः । क्लीं कृष्णाय करौ पातु क्लीं कृष्णायांगुलीरवेत् ॥१३॥ हृदयं श्रीं भुवनेशः क्लीं कृष्णाय स्तनौ मम । गोपालायाग्निजाया मे कुक्षियुग्मं सदावतु ॥१४॥ क्लीं कृष्णाय सदा पातु पार्श्वयुग्ममनूत्तमः । कृष्ण गोविन्दकौ पातांस्मराद्यौ ङेयुतौ मनुः ॥१५॥ अष्टाक्षरः पातु नाभिं कृष्णेति द्वयक्षरोऽवतु । पृष्ठं क्लीं कृष्णकं कालं क्लीं कृष्णायद्विढांतकः ॥१६॥ सक्थिनी सततं पातु श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्ण ठद्वयम् । उरू सप्ताक्षरः पातु त्रयोदशाक्षरोऽवतु ॥१७॥ श्रीं ह्रीं क्लीं यदतो गोपीजनवल्लभपदं ततः । भायस्वाहेति पायुं वै क्लीं ह्रीं श्रीं स दशाक्षरः ॥१८॥ जानुनी च सदा पातु ह्रीं श्रीं क्लीं च दशाक्षरः । त्रयोदशाक्षरः पातु जंघेचक्रगदायुधः ॥१९॥

श्रीमन्मुकुन्दचरणौ सदा शरणमहं प्रपद्ये । इति शरण मंत्रस्तु पादौ पायात्सदा मम ॥२०॥ अष्टादशाक्षरो ह्रीं श्रीं पूर्वको विंश वर्णकः । सर्वाङ्गं मे सदा पातु द्वारकानायकोवली ॥२१॥ नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् । ताराद्यो द्वादशार्णोऽयं प्राच्यां मां सर्वदा वतु ॥२२॥ श्रीं ह्रीं क्लीं दशवर्णकः क्लीं ह्रीं श्रीं षोडशाक्षरः । गदाद्युदायुधो विष्णुः समेग्निदिशि रक्षतु ॥२३॥ ह्रीं श्रीं दशाक्षरो मंत्रो दक्षिणे मां सदावतु । तारो नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय च ॥२४॥ स्वाहेतिषोडशार्णोऽयं नैऋत्यां दिशि रक्षतु । क्लीं हृषीकेशाय पदं नमो मां वारुणेऽवतु ॥२५॥ अष्टादशार्णः कामान्तो वायव्ये मां सदावतु । श्रीं माया काम कृष्णाय गोन्दिाय द्विठो मनुः ॥२६॥ द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदावतु । वाग्भव. काम कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय ततः परम् । द्वाविंशदक्षरो मन्त्रो मामै-

शान्ये सदावतु ।।२८।। कालियस्य फणामध्ये दिव्यं नृत्यं करोति तम् । नमामि देवकीपुत्रम् नृत्यमानं तमच्युतम् ।।२९।। द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रोप्यधो मां सर्वदावतु । क्लीं कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि ।।३०।। तन्नो नंगः प्रचोदयात् एषा मां पातु चोर्द्धतः । इति ते कथितं विप्र सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ।।३१।। त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं ब्रह्म रूपिणम् । ब्रह्मेशप्रमुखाधीशनारायण मुखाच्छ्रुतम् ।।३२।। गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्तु यः । सकृद्विस्त्रिर्यथाज्ञानं सोपि सर्वतपोमयः ।।३३।। मन्त्रेषु सकलेष्वेव देशिकोनात्र संशयः । शत-मष्टोत्तरं चापि पुरश्चर्य्याविधिस्मृतः ।।३४।। हवनादिदशांशेन कृत्वा तत्साधयेद्ध्रुवम् । यदि स्यात्सिद्धकवचो सिद्धिरेव न संशयः ।।३५।। मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्य्यां विना ततः । स्पर्धामुद्धूय सततं वाणीलक्ष्मीर्वसेत्ततः ।।३६।। पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् । दशवर्षसहस्राणां पूजायां फलमाप्नुयात् ।।३७।।तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् । भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।।२८।। गोरोचनाकुंकुमाभ्यां कस्तूरीरक्तकैः पुनः । कण्ठे वा दक्षिणे वाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः ।।३९।। पठना-द्धारणात्सर्वा पृथ्वी मधुपुरी समा । यत्र कुत्र विपन्नोऽपि मथुरायां मृतो भवेत् ।।४०।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेय शतानि च । महा-दानानि यान्येव प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ।।४१।। कलां नार्हन्ति तान्येव सकृदुच्चारणाद्यतः । कवचस्य प्रसादेन सायुज्यं लभते नरः ।।४२।। त्रैलोक्यं मोक्षयेद्देव त्रैलोक्यविजयी भवेत् । इदं कवचमज्ञात्वा भजेद्यः पुरुषोत्तमम् ।। शतलक्षं प्रजप्तोपि न मन्त्रः सिद्धि दायकः ।।४३।।

इति श्रीसनत्कुमारतन्त्रे त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं समाप्तम् ।।

ॐ मस्य श्री गोपालस्तोत्रमंत्रस्य नारद ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । अथ ध्यानम् । सजल जलदनीलं दर्शितोदारशीलं करतलधृतशैलं वेणुवाद्ये रसालम् । व्रज जनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम् ॥१॥ श्रीनारद उवाच--नवीननीरदश्यामं नीलेन्दीवरलोचनम् । वल्लवीनन्दनं वन्दे कृष्णं गोपालरूपिणं ॥२॥ स्फुरद्बर्हदलोद्बद्धनीलकुञ्चितमूर्धजम् । कदम्बकुसुमोद्भासि वनमालाविभूषितम् ॥३॥ गण्डमण्डलसंसर्गिचलत्काञ्चनकुण्डलम् । स्थूलमुक्ताफलोदारहारोद्योतितवक्षसम् ॥४॥ हेमाङ्गदतुलाकोटिकिरीटोज्ज्वलविग्रहम् । भन्दामारुतसंक्षोभि वलिताम्बरसञ्चयम् ॥५। रुचिरौष्टपुटन्यस्त वंशीमधुरनिस्वनैः । लसद्गोपालिकाचेतो मोहयन्तं मुहुर्मुहुः ॥६॥ वल्लवीवदनाम्भोजमधुपानमधुव्रतम् । क्षोभयन्तं मनस्तासां सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः ॥७॥ यौवनोद्भिन्नदेहाभिः संसक्ताभिः परस्परम् । विचित्राम्बरभूषाभिर्गोपनारीभिरावृतम् ॥८॥ प्रभिन्नांजनकालिंदी जलकेलिकलोत्सुकम् । योधयन्तं क्वचिद्गोपान् व्याहरन्तं गवां गणम् ॥९॥ कालिन्दीजलसंसर्गि शीतलानिलकम्पिते । कदम्बपादपच्छाये स्थितं वृन्दावने क्वचित् ॥१०॥ रत्नभूधरसंलग्नरत्नासनपरिग्रहम् । कल्पपादपमध्यस्थं हेममंडपिकागतम् ॥११॥ वसन्तकुसुमामोदसुरभीकृदिङ्मुखे । गोवर्द्धनगिरौ रम्ये स्थितं रासरसोत्सुकम् ॥१२॥ सव्यहस्ततले न्यस्तगिरिवर्य्यातपत्रकम् । खंडिता खंडलोन्मुक्तमुक्तासारघनाघनम् ॥१३॥ वेणुवाद्यमहोल्लास कृतहुंकारनिस्वनैः । सवत्सैरुन्मुखैः शश्वद्गोकुलैरभिवीक्षितम् ॥१४॥ कृष्णमेवानुगायद्भिः तच्चेष्टावशवर्त्तिभिः । दण्ड-

पाशोद्यतकरैर्गोपालैरूपशोभितम् ॥१५॥ नारदाद्यैर्मुनिश्रेष्ठैर्वेद-वेदाङ्गपारगैः । प्रीतिसुस्निग्धया वाचा स्तूयमानं परात्परम् ॥१६॥ य एवं चिन्तयेद्देवं भक्त्या संस्तौति मानवः । त्रिसंध्यं तस्य तुष्टोऽसौ ददाति वरमीप्सितम् ॥१७॥ राजवल्लभतामेसि भवेत्सर्वजनप्रियः । अचलां श्रियमाप्नोति स वाग्मी जायते ध्रुवम् ॥१८॥ इति श्रीगौतमीय तन्त्रोक्त गोपालस्तवराजः सम्पूर्णः ॥

ॐ मस्य श्रीगोपालसहस्रनामशापविमोचनमहामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः श्रीगोपाल देवता पंक्तिश्छन्दः सदाशिववाक्यशाप-विमुक्त्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि । श्रीगोपालाय देवतायै नमः मुखे । पंक्तिश्छन्दसे नमः गुह्ये । सदा-शिववाक्यशापविमुक्तये नमः सर्वाङ्गे ॐ ऐं अंगुष्टाभ्यां नमः । ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रीं अना-मिकाभ्यां नमः । ॐ वामदेवाय कनिष्टकाभ्यां नमः । ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्लीं शिखायै वषट् । ॐ श्रीं कवचाय हुं । ॐ वामदेवाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ स्वाहा सौं अस्त्राय फट् । ॐ भूर्भुवस्वरोम (इससे दिशाओं को बांधकर भगवान् का ध्यान करे) ध्यायेद्देवं गुणातीतं पीतकौशेयवाससम् । प्रसन्नं चारु वदनं निर्गुणं श्रीपतिं प्रभुम् । ॐ ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं वामदेवाय नमः स्वाहा सौं आदावष्टो-त्तरशतं जप्त्वा पश्चान्नामानिजपेत् । इति श्रीगौतमीय तन्त्रे गोपाल-सहस्रनामशापविमोचन विधिः सम्पूर्णः ।

इस तरह १०८ बार मन्त्र को जपकर श्रीगोपालसहस्रनाम का पाठ करे, फिर पाठ समाप्त कर और उसको श्रीभगवान् के अर्पण कर हवन करे । अथ कुश-कण्डिका कारणम् ।

आदौ शुद्धायां भूमौ दर्भैः परिसमूहनं हस्तमात्र परिमितां भूमिं चतुरस्रां कुशैः परिसमुह्य तानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनो-पलिप्य स्रुवमूलेन प्राङ् मुखं प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणा-नामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां परिस्थापयेत् । तत उदकेनाभ्युक्षणम् ॥

पवित्र भूमि पर कुशों से झाड़ कर १ हाथ चौकनी पृथ्वी को कुशों से झाड़ कर और उन कुशों को ईशान कोण में फेंक कर गोबर के जल से लीप कर स्रुवा के मूल से पूर्व की तरफ एक बिलस्त मात्र बरावर तीन लकीरें खींच कर लकीरों के अनुसार अनामिका और अंगुठे से मिट्टी उठा कर ईशान कोण में रख दे । फिर जल से अभ्युक्षण करे -

अथाग्नेः स्थापनम् । वामहस्तानामिकया भूमिं स्पृशंस्ताम्रादिपात्रेणाहृतमग्निमानीयात्माभिमुखं निद-ध्यात्, तद्रक्षार्थं किञ्चिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्ष-तादिप्रक्षेपः ।

बायें हाथ की अनामिका से पृथ्वी को स्पर्श करताा हुआ तांबे आदि के पात्र से लाई हुई अग्नि को लाकर अपने सामने रक्खे

और उसकी रक्षा के लिये अग्नि पात्र में अक्षतादि डाले । फिर अग्नि के दक्षिण तरफ वस्त्र का आसन देकर कुश के बने हुये ब्रह्मा को वरण कर बैठावे । फिर प्रणीता पात्र को सामने रखकर जल से पूर्ण कर कुशों से ढाक कर ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि के उत्तर तरफ कुशों पर रक्खे । फिर कुशों का परिस्तरण कल्पना करे । हाथ में ८१ कुशा लेकर उसके चार भाग कर एक कुशा को हाथ में लिये हुए पहले भाग को अग्नि से ईशान कोण तक दूसरे भाग को ब्रह्मा से अग्नि पर्यन्त, तीसरे भाग को नैऋत्य कोण से वायु कोण तक और चौथे भाग को अग्नि से प्रणीतापात्र तक बिछावे । फिर अग्नि के उत्तर से पश्चिम दिशा में पवित्र छेदन के लिये तीन कुशा पवित्र बनाने के लिये अग्रभाग के सहित दो कुशा प्रोक्षणी पात्र आज्य स्थाली चरू स्थाली संमार्जन कुशा (५) उपयमन कुशा (७) एक बिलस्त लम्बी तीन काष्ठ स्रुव, घी, पूर्णपात्र सब सजाकर तीन पवित्र छेदन कुशाओं से दो पवित्रा छेदन कर उन पवित्रों को हाथ में पहिर कर प्रणीता के जल को प्रोक्षणीय पात्र में रखकर प्रोक्षणीय पात्र को वाम हाथ में लेकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगूठे से पवित्रा लेकर तीन बार ऊपर छिड़के । फिर प्रोक्षणीय पात्र को आकाशस्थ प्रणीता के जल से ऐसे पूर्ण करे कि, जिससे पृथ्वी पर जल न पड़े, पड़ने से प्रायश्चित करना पड़ेगा । फिर प्रोक्षणीय पात्र के जल से सब साम्रगी को सिंचन करे, फिर अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणीय पात्र को रख दे । फिर घी के पात्र में घी रक्खे, चरू के पात्र में चरू रक्खे घी को गरम रक्खे । फिर जलते हुये तृण को लेकर घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में फेंक दे । फिर स्रुवा को तपाकर

सुमार्जन कुशाओं से स्रुव को सम्मार्जन कर मूल से मूल को बीच से बीच को और अग्र से अग्र भाग को पोंछ कर फिर तपाकर दाहिनी तरफ रख ले। फिर घी को उतारे और देखे यदि कोई खराब चीज हो तो निकाल दे। फिर उपयमन कुशाओं को लेकर बाएँ हाथ में धारण कर अग्नि का पर्युक्षण कर उठ, मन से ब्रह्मा का ध्यान कर चुपचाप घी में भीजी हुई तीनों काठों को अग्नि में डाल दे। फिर बैठकर सपवित्र प्रोक्षणीय के जल से अग्नि को पर्युक्षण कर पवित्राओं को प्रणीता पात्र में रक्खे। आक, पलास, खदिर, अपामार्ग, पीपल, उदम्बर, शमी, दूर्वा, कुशा इनमें से कोई एक काठ अथवा सब काठ इकट्ठे करे। आक से व्याधि नाश होती है। पलास से सब काम पूर्ण होते हैं। खदिर से अर्थ लाभ। अपामार्ग से इष्ट सिद्ध। अश्वत्थ से प्रजा लाभ। उदुम्बर से स्वर्ग। शमी से पाप नाश। दूर्वा से दीर्घायु। कुश से समस्त पदार्थों की रक्षा होती है। फिर कुण्ड में ॐ रं इस अग्नि बीज को लिखे फिर-

उत्पत्तिमुद्रां कृत्वाऽऽवाहयेदग्निपुरुषम्। स्व-तेजसा समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। स्रु चं स्रुवञ्च शक्तिञ्चाप्यक्षमालाञ्चदक्षिणैः। तोमरं व्यजनं चैव घृत-पात्रं तु वामकैः। विभ्रतं सप्तभिर्हस्तैः द्विमुखं सप्तजिह्व-कम्। दक्षिणंच चतुर्जिह्वं त्रिजिव्हं चोत्तरं मुखम्। कोटि-द्वादशमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्। स्वाहास्वधा-वषट्कारैरंकितंमेषवाहनम्। रक्तमाल्यांवरं रक्तं रक्त पद्मासनस्थितम्। रौद्रं वागीश्वरीरूपं वन्हिमावाहया-

म्यहम् । त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरसितद्युते: । आगच्छ भगवन्नग्ने ! यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव । अग्ने वैश्वानर इहागच्छ इह तिष्ठ ।

इस तरह आवाहन कर पञ्चोपचार से पूजा कर अग्नि की सात जिन्हाओं का पूजन करे ।

ॐ कनकायै नमः । ॐ रक्तायै नमः । ॐ कृष्णायै नमः । ॐ उद्गारिण्यै नमः॰ ।

इन चार का दक्षिण में-

ॐ सुप्रभायै नमः । ॐ बहुरूपायै नमः । ॐ अतिरिक्ततायै नमः ।

इन तीन का उत्तर में पूजा करे । फिर स्रुव वनस्पति प्रभृति की पूजा कर-

ॐ अद्य अमुक मंत्रसिद्ध्यर्थं मंत्रजपदशांश-हवनमहं करिष्ये ।

यह सङ्कल्प कर जप का दशांश हवन करे । हवन शेष होने पर ताम्बूल पूङ्गीफल, घृत, पूर्ण नारिकेल अथवा हरीतकी स्रुव में रख कर-

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव-विक्रीणावहा इष मूर्जर्ठ० शतक्रतो स्वाहा ।

यह पढ़ कर पूर्णाहुति दे। फिर सब कुशाओं को उठा कर-

ॐ देवागातु विदोगातु वित्वागातुमित मन-सस्पत इमं देव यज्ञर्ठ० स्वाहा व्वातेधा स्वाहा।

इससे होम करे। फिर भस्म लेकर लगावे। फिर आरती करे। फिर दधि लेकर अग्नि का विसर्जन करे।

**गच्छत्वं भगवन्नग्ने ! स्वस्थानं कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।**

इस तरह अग्नि विसर्जन कर और आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर अपने हाथ से पाक कर भगवान् को समर्पण करे। यदि अपने आप पाक न कर सके तो सद्वंस जात सच्चरित्र ब्राह्मण को पञ्च संस्कार पूर्वक वैष्णव मन्त्र से दीक्षित कर उससे पाक करावे। और पूर्व में लिखी हुई विधि से भगवान् को भोग लगा कर **ॐ यज्ञेन यज्ञं** तथा-

भजस्व देव्या सह देव निद्रा मुन्निन्द्रनीलोत्पल-पत्रनेत्र्या।पादारविन्दं तव मंदमंदं संवाहयाम्येव सदा ह्युदारम्।

यह बोलकर भगवान् को शयन करा कर मन्दिर बन्द कर साष्टाङ्ग प्रणाम कर भगवद्भक्तों को प्रसाद देकर स्वयं भी प्रसाद लेकर विश्राम करे। सायंकाल फिर चार बजे भगवान् का उत्थापन का उनके सामने भगवद्गुणानुवाद युक्त कीर्तन कथा आचार्य-प्रणीत

आत्म-परमात्म तत्त्व विषयक वेदान्त ग्रन्थों का अनुशीलन तथा कथा करे । फिर सायंकाल की आरती कर-

श्रीकेशवकाश्मीरि भट्टाचार्य विरचित--

गोविन्द गोकुलपते

इत्यादि श्लोकों से भगवान् का स्तवन कर श्रीहँस भगवान् से लेकर निज गुरुदेव पर्यन्त समस्त आचार्यों का स्तवन कर प्रणाम करे । फिर रात्रि को भोग निवेदन कर भगवान् को शयन कराय और उनकी मधुर लीलाओं का स्मरण करते हुये रात्रि शयन करे । इस तरह अष्ट प्रहर भगवान् की सेवा--सुश्रूषा में अपने तन, मन, धन को लगा कर योगि दुर्लभ परा भक्ति को प्राप्त कर भगवद्भावापत्ति ध्रुवास्मृति रूप परम पद को प्राप्त करे ।

□

पञ्चगव्य बनाने की विधि

पञ्चगव्य करने की विधि तथा उसका परिमाण पराशर स्मृति के ११ वें अध्याय के अनुसार सर्व साधारण के जानने के लिये लिखी जाती है। क्योंकि दीक्षा से पूर्व इसी की आवश्यकता है--१ तोला गो-मूत्र, आधा तोला गोमय, सात तोला गो का दूध, ३ तोला गो का दही, १ तोला गो का घृत, १ तोला कुशोदक। इस प्रकार पञ्चगव्य का परिमाण है।

गायत्री मंत्र को उच्चारण कर पञ्चगव्य बनाने के पात्र में गोमूत्र डाले। **गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोवह्वये श्रियम्।** यह मन्त्र उच्चारण कर गोमय डालें। **आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भावाव्वाजस्यसङ्गथे** यह मन्त्र उच्चारण कर गोदुग्ध डालें। **दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जि ष्णोरश्वस्यव्वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूꣳषितारिषत्।** यह मन्त्र उच्चारण कर गो का दधि डालें। **तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाघृष्टं देवयजनमसि।** यह मन्त्र उच्चरण कर गो-घृत डालें। **देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्। प्रतिगृह्णाम्य-ग्रेष्ट्वास्येनप्रश्नामि** यह मन्त्र उच्चारण कर कुशोदक डालें। **आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान-उर्ज्जेदधातन महेरणाय चक्षसे।** इस मन्त्र से सब को आलोडन करे। **मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽश्वे-**

पुरीरिषः । मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा-हवामहे । इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे । **इरावती धेनुमतीहि भूत मूर्यवासिनो मनवेदशस्या व्यस्क्कव्भ्नारोदसी विष्वेते दाधर्त्थ पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहा । इदं विष्णुर्व्विचक्रेमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाठं. सुरे स्वाहा ।** इन दो मन्त्रों का उच्चारण कर पञ्चगव्य की १० आहुती कर अविशिष्ट को ॐ कार का उच्चारण कर पान करे । फिर यदि द्विजाति हो तो नवीन यज्ञोपवीत धारण करे । उसकी विधि यह है--जल से यज्ञोपवीत को प्रक्षालन कर तथा स्वयं आचमन कर संकल्प करे । **अद्य ---- भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थं अष्टादशाक्षरमन्त्र दीक्षा कर्माङ्गत्वेन नवीनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये ।** इस संकल्प को बोलकर यज्ञोपवीत को अपने दोनों हाथों के बीच में लेकर १० बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करे । फिर **ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परीष्ठी ऋृषिर्लिङ्गोक्तादेवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।** यह बोल कर **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोप-नह्यामि** इन दोनों मन्त्रों को पढ़कर अलग-अलग दोनों यज्ञोपवीतों को धारण करे, प्रत्येक यज्ञोपवीत धारण करने के बाद आचमन कर यथा शक्ति गायत्री मन्त्र का जाप करे । पुराना यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र-**एतावद्दिनपर्य्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्व-त्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ।** यह मन्त्र बोल कर माथे की तरफ से पुराने यज्ञोपवीत को निकाल कर किसी पवित्र नदी, सरोवर या लतातरु शाखाओं पर विसर्जित कर दें ।

संक्षेपतः दीक्षा प्रकारः

यज्ञोपवीत धारण करने के बाद मुमुक्षु शिष्य गुरुदेव के सन्मुख जा साष्टांग प्रणाम कर त्रायस्वभो जगन्नाथ गुरो संसार वह्निना । दग्धं मां कालदष्टश्च त्वामहं शरणं गतः यह मन्त्र बोल कर भो भगवन् त्रिविधतापैः षड्भिर्विकारैः पञ्चक्लेशैस्त्रिभिर्गुणकर्मभिः शब्दादिभिश्च विषयैः सदैव सर्वतोग्रस्तोऽहमनन्ता-संख्येयसर्वप्रकारक पातकोपपातकमहापातकादिभिश्चपीड़ितोऽह-मात्मनि स्वतन्त्रकर्तृत्वादिभिः स्वतन्त्रसत्ताश्रयत्वरूपस्वत्वाभिमानेन च तत्र तत्र सम्बन्धस्तत्सम्बन्धाभिनिवेशजन्यक्लेशाज्ञातवेपथुस्तेषु निर्विण्णस्तेभ्यो मुमुक्षुर्दावाग्निपीड़ितो गङ्गोदकमिव त्वां शरणं गतोऽस्मि भृत्यो भूत्वा स्वामिनं त्वां वृणोमि, आत्मीयो भूत्वा सर्वसम्बन्धावच्छिन्नमात्मानं त्वां वृणोमि सर्वसाधनशून्यमकिञ्चनं सर्वपापयुक्तमगतिं चापि मां केवलस्वासाधारणकारुण्यादिगुणवशात् सर्वात्मभावेन मया निवेदितमात्मानमात्मीयवर्गञ्चात्मसात्कृत्वा सर्वसम्बन्धेन मम गोप्ता भूत्वा मामनुगृहाण ।

हे भगवन् ! मैं ३ ताप, ६ विकार, ५ क्लेश, ३ गुण और कर्म तथा शब्दादि विषयों से तथा अनन्त पातकों से सदा पीड़ित हूँ । अपने में स्वतन्त्रकर्तृत्व तथा स्त्री पुत्रादि में यह मेरी हैं इस अभिमान से तथा उनके सम्बन्ध से उत्पन्न नाना विध क्लेशों से

भयभीत हो उनसे छूटने की इच्छा से जैसे दावाग्नि से पीड़ित गङ्गादिकों में जाता है, वैसे ही मैं आपकी शरण आया हूं। आपका भृत्य होकर रहूँगा। मुझमें कोई साधन नहीं है, मैं अगति तथा अनेक पापों से युक्त हूँ। आप अपनी असाधारण कृपा से मुझे आत्म-सात् करें। और सब प्रकार से मेरी रक्षा करें।

शिष्य की इस प्रार्थना को सुन कर उसे अपने पास बैठा अपने हाथ से शिष्य का हाथ पकड़ अपने चरणों पर रखवा कर उससे पूछें; क्या तुम सचमुच संसार के दुःख से भयभीत होकर हमारे शरण आये हो, और हमारे भृत्य होकर रहोगे और शिष्य से तीन बार कहलावे कि मैं संसार से भयभीत होकर आपकी शरण आया हूँ तथा आजन्म आपका भृत्य होकर रहूँगा--जब शिष्य स्वीकार करले तब गुरु कहे कि **आत्मसात् करोमि, तव गोप्ता भवामि मा भीः** मैं तुमको आत्मसात् करता हूँ। तुम्हारी सब प्रकार से रक्षा करूँगा, तुम भय मत करो। तदनन्तर द्वादश तिलक गुरुदेव अपने हाथ से शिष्य के लगा देवे। तथा दाहिने हाथ के मूल में चक्र और बाँये हाथ के मूल में शंख लगावें। फिर भगवत्सम्बन्धी अथवा आचार्य सम्बन्धी नाम का **ॐ अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयादधिजायते आत्मा वै पुत्र नामासि सजीवशरदः शतम्।** इस मन्त्र को बोल कर संस्कार करे। फिर भगवान् के चरणारविन्दों में अर्पण की हुई तुलसी की कण्ठी शिष्य के कण्ठ में धारण करा दें। फिर शिष्य को गोद में बैठा कर यदि बड़ा हो तो समीप बैठा कर उसका दाहिना हाथ अपने कण्ठ में लगा कर गुरु-परम्परा का उपदेश

करें । फिर स स्वराड् भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति । इस मन्त्र से स्वाराज्याभिषेक करे और उसे बतावे कि गुरोरंकमेव तव सिंहासनं गुरुदक्षिण हस्त एव तव छत्रं तद्वामहस्त एव चामरं तद्दत्ता सपरिकरा विद्यैव तव सेना श्रीभगवत्सम्बन्ध एव तव राजधानी श्रीभगवद्भावापत्तिरेव जयश्रीः कामादिनिवृत्ति-पूर्वकप्रकृति-सम्बन्धध्वंस एव दिग्विजयः । गुरु का अङ्क ही तुम्हारा सिंहासन है । उनका दाहिना हाथ ही तुम्हारा छत्र तथा बाँया हाथ तुम्हारा चमर है, गुरु से प्राप्त विद्या ही सेना तथा भगवत्सम्बन्ध ही तुम्हारी राजधानी है । भगवद्भावापत्ति रूप मोक्ष ही जयश्री तथा कामादि निवृत्ति पूर्वक प्रकृति के सम्बन्ध का नाश ही तुम्हारा दिग्विजय है । ऐसा आशीर्वाद दे--शिष्य ! पुत्र !! महाभाग !!! समाहितमना भव । अभिषेकं ते ह्यकरवं ब्रह्मस्वाराज्यसिद्धये । संसारभय-मुत्सृज्यममांकारोहणं कुरु । आत्मानं तत्र निक्षिप्य निर्भयो भवसुव्रत ब्रह्मविद्यां प्रदास्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते । यया सर्वाणि भूतानि पश्यस्यात्मन्यथोहरौ। यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यतेनाधिकं ततः । यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते । तं विद्याद्दुःख सयोगवियोगं योगमात्मनः । लभ्यते परमं धाम यतो नावर्तते बुधः । यह पढ़ कर शान्ति पाठ पूर्वक शिष्य के दाहिने कान में पहिले मुकुन्दमन्त्र फिर अथर्ववेदीय अष्टादशाक्षर श्रीगोपाल मन्त्र सुनावे । फिर मुमुक्षु शिष्य गुरु के अङ्क से उतर कर साष्टाङ्ग प्रणाम करे, तदनन्तर गुरुदेव शिष्य के हाथ में जल देकर और अपने हाथ में श्रीशालग्रामजी को विराजमान

कर आत्म समर्पण मन्त्र शिष्य से बुलवाते हुये अपने से अभिन्न श्रीभगवान् के लिये समर्पण करावे । समर्पण मन्त्रः ।

इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्य-वस्थासु मनसा, वाचा, कर्मणा, हस्ताभ्यां, पद्भ्यामुदरेण, शिश्ना, यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत् सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मां मदीयञ्च सकलं हरये सम्यगर्पये ॐ तत्सत् ।

फिर शिष्य का दक्षिण हस्त अपने हस्त में लेकर **श्रीकृष्ण रूक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर । स्वानुग्रहेण भगवन्नात्म-सात्कुरु केशव । संसारतापमग्नोयमागतः शरणं तव । स्ववात्सल्यगुणेनैनं ह्यात्मसात्कुरु माधव** इन मन्त्रों से शिष्य का हाथ भगवान् को ग्रहण कराकर भगवान् के आत्मसात्करादे । फिर अपना चरणामृत और प्रसाद देकर उसे आलिंगन कर कहे कि-मैंने तुमको सब प्रकार से आत्मसात् किया है । अतः तुमको उचित है कि, तुम सब सम्बन्धा-नुसार तथा तत्तत्समयानुसार भृत्यपुत्र के तुल्य सेवा करो ।

शिष्य कहे कि भगवन् **एवमेव** ऐसे ही करूँगा ।

फिर शिष्य के सेवा करने के लिये यथा योग्य भगवान् का चित्र ले, पूजन कर, शिष्य के शिर पर रख कर यही तुम्हारे स्वामी हैं । तथा तुम्हारे सभी सम्बन्धों के विषय हैं, जिनके लिये तुमने

अपनी आत्मा और आत्मीय समर्पण किया है । अतः अपनी बुद्धि और योग्यता के अनुसार इनमें आत्मबुद्धि करके प्रीति पूर्वक तत्तत्समय के अनुसार सेवा नित्य करनी चाहिये । ऐसा कहकर पूजा की विधि बता भगवान् की मूर्ति या चित्र शिष्य के लिये दे दे ।

इति संक्षेपतः दीक्षा प्रकारः ।

इति श्रीमत्भगवन्निम्बार्काचार्य वीथीपथिक पं. लाडिलीशरण-
देव संग्रहीता--नित्यकर्मपद्धति

।। समाप्ता ।।

सुखं वाञ्छन्ति सर्वे हि तच्चधर्म समुद्भवम् ।
तस्माद्धर्मः सदाकार्यः सर्ववर्णैः प्रयत्नतः ।।

✻ श्रीभगवत्पूजन-महाभिषेक-सामग्री ✻

१--तीर्थजल

२--पञ्चामृत

१-गोदुग्ध २-गोदधि ३-गोघृत

४-मधु (शहद) ५-शर्करा (शक्कर)

३--सुगन्धी द्रव्य (इत्र) ४--केशर

५--वस्त्र (पोशाक) ६--यज्ञोपवीत

७--आभूषण ८--चन्दन

९--तुलसीदल १०--पुष्पमाला

११--दर्पण १२--धूप

१३--दीप १४--नैवेद्य

१५--ऋतुफल १६--ताम्बूल

१७--लवङ्ग १८--ऐला

१९--पुङ्गीफल २०--कर्पूर (कपूर)

२१--आरती २२--भेंट

२३--न्यौछावर २४--पुष्पाञ्जलि